जय गुरुदेव

अमर सन्देश

सतगुरु की अखण्ड वाणी द्वारा जीवन में ही
अमर पद प्राप्त कराने हेतु मार्ग दर्शाने वाली पत्रिका

वर्ष २१ अंक ६

अक्टूबर १९७८ [वार्षिक मूल्य १०
[illegible] प्रति १]

❀ जयगुरुदेव ❀

अमर सन्देश

[सतगुरु की अखण्ड वाणी,
जीवन पथ की कहानी।
जीवन सुधारक वाणी,
जीवों की भव पार कहानी॥]

वर्ष	अंक
२१	६
अक्टूबर	सन् १९७८
क्वार	सं० २०३५

प्राप्ति स्थान

व्यवस्थापक अमर सन्देश

२३ पाण्डेय बाजार

आजमगढ़ (उ० प्र०)

प्रकाशक

बिरौल सन्त आश्रम

कृष्ण नगर

मथुरा

टेलीफोन नं० १३०६

सम्पादक

विश्वनाथ प्रसाद अग्रवाल

वार्षिक मूल्य

१०) रू०

एक प्रति का मूल्य १ रू०

अमर सन्देश के नियम

❀ अमर सन्देश हर माह की २६, २७ तारीख को प्रकाशित होता है जो पाठकों के पास माह की पहली तारीख या उसके पहले मिल जाता है।

❀ जिस माह की १० तारीख तक उस माह का अमर सन्देश न मिले तो अप्राप्ति की सूचना भेजें। सूचना ग्राहक संख्या तथा अपना पता सही और साफ जरूर लिखें। यह भी लिखें कि कौन सा अंक नहीं मिला। ऐसे लोगों को माह की २६ ता० तक अमर सन्देश भेजा जाता है।

❀ अमर सन्देश का नया वर्ष अब मई से आरम्भ होता है। जनवरी से नहीं। मगर आप किसी भी महीने से ग्राहक बन सकते हैं। इसलिए नये ग्राहक मनीआर्डर कूपन पर अवश्य साफ साफ लिखें कि वे किस मास से ग्राहक बनना चाहते हैं।

अमर सन्देश तथा अमर सन्देश की फाइलें पुस्तकों के साथ नहीं भेजी जा सकती क्योंकि अमर सन्देश रजिस्टर्ड पत्रिका है। उसका डाक का नियम अलग है अतः उसके लिए डाक खर्च प्रति फाइल दो रुपया अलग से भेजें। इस समय फाइलें सब खतम हैं।

रुपये तथा पत्र भेजने का पता:-

व्यवस्थापक—
'अमर सन्देश'
२३, पाण्डे बाजार,
आजमगढ़ उ० प्र०

Scanned with CamScanner

स्वामी जी ने कहा

तीन बातें सदैव याद रक्खोः—

(१) किसी की निन्दा न करना न सुनना। निन्दा करने से उसके पाप के बोझे से तुम दब जाओगे।

(२) कम खाओ इससे आलस नहीं आयेगा शरीर तन्दुरुस्त तथा चुस्त और फुर्तीला रहेगा। साधन भजन ठीक बनेगा।

(३) गम खाओ अर्थात् बर्दास्त करो। कोई कुछ भी कहे उसे सहन कर लो।

वर्ष २१ अंक ६] अक्टूबर १९७८ वार्षिक मूल्य १० रु० [एक प्रति १ रु०

गुरु सरन आज मैं पाई

गुरु सरन आज मैं पाई। मेरे आनँद अधिक बधाई।। १ ।।
गुरु कृपासिंध मैं पाये। मेरे घर दर बजत बधाये।। २ ।।
गुरु परम पुरुष सुखदाता। उन चरन मोर मन राता।। ३ ।।
गुरु भक्ति करूँ दिन राती। सब चित से अति गुन गाती।। ४ ।।
गुरु दर्शन सुरत लगाऊँ। उन अंतर प्रेम बढ़ाऊँ।। ५ ।।
गुरु मूरत नैनन ताकूँ। शशि भान कोटि छबि झांकूँ।। ६ ।।
गुरु सम अब कोइ न दिखाई। मैं फेरूँ यही दुहाई।। ७ ।।
गुरु चरन पकड़ मेरे भाई। क्यों भरमे मर तन बाई।। ८ ।।
अब जन्म सुफल कर अपना। गुरु प्रेम करो जग सुपना।। ९ ।।
घन रैन अंधेरी भारी। गुरु मूरत चन्द्र उगा री।। १० ।।
सीतलता हिरदे आई। गुरु बचन चांदनी छाई।। ११ ।।
गुरु से कोइ बड़ा न मेरे। सब पड़े काल के घेरे।। १२ ।।
गुरुमुख कोई सतगुरु हेरे। मनमुख सब काल के चेरे।। १३ ।।
गुरु महिमा मुख से कहते। अंतर में प्रीत न धरते।। १४ ।।
भरमों में भटक फिरते। गुरु पद में चित्त न धरते।। १५ ।।
वह जीव अभागी जानूँ। मैं गुरु बिन और न मानूं।। १६ ।।
अब आरत गुरु की करता। राधास्वामी चरन पकड़ता।। १७ ।।

Scanned with CamScanner

[पृष्ठ १६४ का शेष]

भारत का एक बहुत बड़ा तीर्थ है

इसलिए यह तो समूचे भारत के लोगों के कानों में बात गूंज गई है। और साथ ही वैसे भी भारत का एक बहुत बड़ा तीर्थ माना जाता है। इस भाव से भी लोग यह समझेंगे उस समय कि बाबा जी का यह कार्यक्रम है।

यह बाबा जी का कार्यक्रम नहीं आप का है

मगर बाबा जी का यह कार्यक्रम नहीं यह कार्यक्रम आप का है। कार्यक्रम रामायण गीता का। कार्यक्रम वेदों शास्त्रों का। कार्यक्रम राम और कृष्ण का। बाबा जी का कार्यक्रम नहीं। कोई आदमी यह कहता है कि बाबा जी कार्यक्रम। बाबा जी का कार्यक्रम नहीं आप का कार्यक्रम है। ऋषि मुनियों का कार्यक्रम जो वे छोड़कर गये वह कार्यक्रम है। और इस भावना से भी लोग आयेंगे ही। हमको काशी में चलना है। वे लोग भी काशी में उपस्थित होंगे। उस साल से भी और इस साल से भी। दोनों का नजारा देखेंगे। आवाजा और दोनों का आनन्द और दोनों का ज्ञान तो लोग करेंगे आ करके। काशी का। और जो बताना है कल बता देंगे क्योंकि लोग और आयेंगे रात में। कार्यक्रम तो आपका कल का है।

असली जन्माष्ठमी कब होगी

तो यह तो आज का सतसंग इसलिए था कि आप लोग शाम को ही उपस्थित हो जायेंगे। तो शाम को एक सतसंग हो जायेगा। तो कल जन्माष्टमी है। क्योंकि रात्रि में १२ बजे के बाद जो जन्माष्टमी मनाई जाती है वह कल ही की तारीख है। मैं समझता हूं कि १२ ही के बाद मनाते हैं इसलिए कल ही की तारीख में। खैर।

विद्यार्थियों को भी आना चाहिये

तो सतसंग तो कल ही का है कल आप को सुना दिया जायगा। और बच्चों को, विद्यार्थियों को जो ऊँचे क्लास में विद्याध्ययन करते हैं, उनको भी आना चाहिए। सब तरह का उनको भी अनुभव भारत भूमि पर रहते हुए करना चाहिए। जब यह अनुभव करते हैं तो हर तरह का भी अनुभव। और जगह समय दे सकते हैं तो बच्चों को ऐसे कार्यक्रम में भी समय देना चाहिए। क्योंकि हम देखते हैं कि बच्चे अब काफी समय अपना देने लगे। बहुत संख्या में बच्चे आने लगे और वह समय बहुत ध्यान पूर्वक देते हैं। यह उनका बड़ा सराहनीय पक्ष विचार और उनकी भावना बनने लगी। इसमें सभी लोगों को होना है।

आशिर्वाद का बड़ा महत्व है

जब माता पिता से, बुजुर्गों से, बड़ों से, आचार्यों से, महात्माओं से आशीर्वाद सदा मिलता है तो यह स्वाभाविक बात होती है कि देश के बच्चे फलते फूलते हैं होनहार बच्चे। और जब वहां बड़ों से आशीर्वाद मिलता है तो देश समृद्ध बनता है। ऋषियों मुनियों से आशीर्वाद को पाकर लोगों ने उस समय अपने वक्त के राजाओं ने अपने को समृद्ध समझा। सुखी समझा। और महात्माओं का आशीर्वाद हमेशा लेते रहे। यह भारत की बराबर देन है। परम्परा है। यहां। और जब आपने आशीर्वाद लेना बन्द कर दिया तो यह अनेक प्रकार की विघटन और आफतें खड़ी हो गई। तो ये अन्तिम गत्वा वही बात हमको सबसे लेनी पड़ेगी।

प्रेम के सब भूखे हैं

और सब यह चाहते हैं छोटे से बड़ा कि हमको प्रेम मिले। और प्रेम के सभी बुड्ढा से बुड्ढा जिसकी कल मृत्यु होने जा रही वह भी प्रेम चाहता है कि मुझे कोई प्रेम दे दे। तो प्रेम चाहेगा ही। जो अनभिज्ञ बच्चा मां की गोद में है वह भी प्रेम चाहता है। आप उस

Scanned with CamScanner

अवस्था में भी बच्चे को अगर डांट दीजिए, अगर आंख दिखाकर, उसको कोई ज्ञान नहीं है। छः महीने का बच्चा। लेकिन आपकी आंख को देखकर रोने लगेगा। लेकिन अगर आप प्यार की ताली बजाइए और प्यार की सीटी बजाइए तो फौरन मतलब यह हंसने लगेगा। और चुप हो जायगा।

प्रेम सभी को चाहिये

तो अज्ञान भी प्रेम चाहता है। बुड्ढा भी प्रेम चाहता है। प्रेम के सभी भूखे हैं। और प्रेम से ही यहां आ रहे लोग। प्रेम से आएंगे। इसमें कोई सन्देह नहीं है।

हमारे लिए हिन्दू मुसलमान इसाई और सभी जाति के लोग समान हैं

तो इसमें हिन्दू हो, चाहे मुसलमान हो, चाहे ईसाई हो हमने तो किसी को बात न कभी की। न हम किसी जाति पांति का कोई झगड़ा रखते हैं न रखते थे। हम तो एक आदमी का झगड़ा रखते हैं। और कुछ नहीं। हमें तो आदमी बनना। मनुष्य बनना इन्सान बनना है। और कोई हमको बात बनने वाली दिखाई नहीं देती क्योंकि अगर यही बात सीख ली और दिखा दी तो काम इस लोगों का बन जाय। हो जायगा काम। जिसकी कमी है वह आनी चाहिए।

मेहनत से भगवान प्रसन्न होंगे

हम तो आपके इस मेहनत और परिश्रम से भगवान अपने आप प्रसन्न होंगे क्योंकि उनकी सृष्टि है। जब उनकी तरफ चलोगे तो अपने आप खुश होने लगते हैं और महात्माओं को क्या है महात्मा तो हर अवस्था में खुश रहते हैं। जब आपको दुःखी देखते हैं तो रोने लगते हैं। और जब सुखी देखते हैं तो हंसने लगते हैं लेकिन भगवान अगर आपके ऊपर प्रसन्न हो जांय तो इससे बड़ी मेहरबानी और परमात्मा की क्या हो सकती है।

साधन भजन अभी से करो

तो आप साधन भजन अभी से करना। ४ घण्टे हर किसी नर-नारी को, काशी में ग्यारह दिन तक समय देना पड़ेगा। एक घण्टा अभी, २ घण्टे के बाद फिर एक घण्टा। दो घण्टे के बाद फिर एक घण्टा। दो घण्टे के बाद फिर एक घण्टा या डेढ़ घण्टा। तीन घण्टे के बाद फिर डेढ़ घण्टा या चार घण्टे के बाद फिर डेढ़ घण्टा। इससे कोई मतलब नहीं। दो घण्टा एक साथ दे दो एक घण्टा दे दो इसके बाद दे दो। ४ घण्टे आपको भजन काशी में। अभी से बैठने की आदत को आप डाल लीजिए। भजन करने की, ध्यान करने की आदत को अभी से डालिए ४ घण्टे तक ग्यारह दिन तक आपको करना पड़ेगा।

कल्पवास वाले ८ घण्टे साधन करेंगे

और जो १५ जनवरी से जो आगे जनवरी आ रही उससे जो उपस्थित होंगे जिनके पास कोई काम नहीं। उनको ८ घण्टे भजन करना पड़ेगा। ८ घण्टे। एक महीने भजन करने का कल्पवास ८ घण्टे। १४ तारीख को ८ घण्टे का कल्पवास समाप्त हो जायगा। १५ जनवरी से और १४ फरवरी तक। और उसके बाद में फिर सबके सब ४ घण्टे में सम्मिलित हो जायेंगे।

साधना अवश्य करना पड़ेगा

४ घण्टे सबको करना। यानी चाहे compulsory समझें चाहे सामूहिक समझें, सबको भजन करना है जिसने भगवान का भेद ले लिया। अभी से अपनी आदत को डालकर के ठीक रखिए क्योंकि यहां भजन बनने वाली बात है। कुछ होने वाली बात है। तो पहले से बने बनाए तैयार रहोगे तो जल्दी उसका लाभ हो जायगा। और वहां आकर के बनना

Scanned with CamScanner

अवस्था में भी बच्चे को अगर डांट दीजिए, अगर आंख दिखाकर, उसको कोई ज्ञान नहीं है। छः महीने का बच्चा। लेकिन आपकी आंख को देखकर रोने लगेगा। लेकिन अगर आप प्यार की ताली बजाइए और प्यार की सीटी बजाइए तो फौरन मतलब यह हंसने लगेगा। और चुप हो जायगा।

प्रेम सभी को चाहिये

तो अज्ञान भी प्रेम चाहता है। बुड्ढा भी प्रेम चाहता है। प्रेम के सभी भूखे हैं। और प्रेम से ही यहां आ रहे लोग। प्रेम से आएंगे। इसमें कोई सन्देह नहीं है।

हमारे लिए हिन्दू मुसलमान ईसाई और सभी जाति के लोग समान हैं

तो इसमें हिन्दू हो, चाहे मुसलमान हो, चाहे ईसाई हो हमने तो किसी को बात न कभी की। न हम किसी जाति पांत का कोई झगड़ा रखते हैं न रखते थे। हम तो एक आदमी का झगड़ा रखते हैं। और कुछ नहीं। हमें तो आदमी बनना। मनुष्य बनना इन्सान बनना है। और कोई हमको बात बनने वाली दिखाई नहीं देती क्योंकि अगर यही बात सीख ली और दिखा दी तो काम इन लोगों का बन जाय। हो जायगा काम। जिसकी कमी है वह आनी चाहिए।

मेहनत से भगवान प्रसन्न होंगे

हम तो आपके इस मेहनत और परिश्रम से भगवान अपने आप प्रसन्न होंगे क्योंकि उनकी सृष्टि है। जब उनकी तरफ चलोगे तो अपने आप खुश होने लगते हैं और महात्माओं को क्या है महात्मा तो हर अवस्था में खुश रहते हैं। जब आपको दुःखी देखते हैं तो रोने लगते हैं। और जब सुखी देखते हैं तो हंसने लगते हैं लेकिन भगवान अगर आपके ऊपर प्रसन्न हो जांय तो इससे बड़ी मेहरबानी और परमात्मा की क्या हो सकती है।

साधन भजन अभी से करो

तो आप साधन भजन अभी से करना। ४ घण्टे हर किसी नर-नारी को, काशी में ग्यारह दिन तक समय देना पड़ेगा। एक घण्टा अभी, २ घण्टे के बाद फिर एक घण्टा। दो घण्टे के बाद फिर एक घण्टा। दो घण्टे के बाद फिर एक घण्टा या डेढ़ घण्टा। तीन घण्टे के बाद फिर डेढ़ घण्टा या चार घण्टे के बाद फिर डेढ़ घण्टा। इससे कोई मतलब नहीं। दो घण्टा एक साथ दे दो एक घण्टा दे दो इसके बाद दे दो। ४ घण्टे आपको भजन काशी में। अभी से बैठने की आदत को आप डाल लीजिए। भजन करने की, ध्यान करने की आदत को अभी से डालिए ४ घण्टे तक ग्यारह दिन तक आपको करना पड़ेगा।

कल्पवास वाले ८ घण्टे साधन करेंगे

और जो १५ जनवरी से जो आगे जनवरी आ रही उससे जो उपस्थित होंगे जिनके पास कोई काम नहीं। उनको ८ घण्टे भजन करना पड़ेगा। ८ घण्टे। एक महीने भजन करने का कल्पवास ८ घण्टे। १४ तारीख को ८ घण्टे का कल्पवास समाप्त हो जायगा। १५ जनवरी से और १४ फरवरी तक। और उसके बाद में फिर सबके सब ४ घण्टे में सम्मिलित हो जायेंगे।

साधना अवश्य करना पड़ेगा

४ घण्टे सबको करना। यानी चाहे compulsory समझें चाहे सामूहिक समझें, सबको भजन करना है जिसने भगवान का भेद ले लिया। अभी से अपनी आदत को डालकर के ठीक रखिए क्योंकि यहां भजन बनने वाली बात है। कुछ होने वाली बात है। तो पहले से बने बनाये तैयार रहोगे तो जल्दी उसका लाभ हो जायगा। और वहां आकर के बनना

आपने सीखा तो सीखने में ही सब समय निकल जायगा फिर मुश्किल।

पहले से न करोगे तो उस समय न कर पाओगे

तो पहले से ही। छः महीने पूरे हैं आज १५ तारीख है। अभी छः महीने पूरे हैं। आज की तारीख तक। शिवरात्रि के दिन फागुन के महीने में इसकी समाप्ति है। इसलिए ६ महीने पहले से आदत डालिए। अच्छी तरह से। बैठने की, देखने की, सुनने की अपनी आदत जो है डालिए। जिस अवस्था में बैठ जाइए आप कुछ समय तक अपनी अवस्था के आसन को बदलें नहीं। इसको अभी से डाल लें। तब तो काम ठीक बन जाएगा और हमको भी करना और आप को भी करना जितने भी लोग जांयगे वहां सब करेंगे। इसीलिए एक विशेष कार्य आपके सामने यह भी है। यह भी है, सब कार्य आपके सामने हैं। जिम्मेदारी हमारी आपकी सभी की है तो इस पर भी आप ध्यान रखेंगे। बोलो जयगुरुदेव।

अभी भगवान का रास्ता मिलेगा

अच्छा, देखो अभी नामदान, जो भजन करते हैं, जो यह इच्छा लेकर के आये हैं कि हमको भजन करने का रास्ता, भगवान का भेद मिल जायेगा और हम भी घर में, सुबह शाम बच्चों की सेवा करते हुये भजन करेंगे। १० मिनट आधा घण्टा चारपाई पर लेट के बैठ के। सुबह शाम जब भी समय मिल जाय। वह जो चाहते हैं मैं अभी बताऊंगा। वे कहीं इधर उधर न जांय। अभी उनको बताया जायेगा। वहां बैठ जायेंगे। और मैं उनको अभी बता दूँगा। बाकी जितने भी लोग ठहरे हुये हैं स्कूल के बरामदों में, स्कूल के पास में तो वहां पर चले जायेंगे। क्योंकि भजन जिनको बताया जायेगा उनके साथ रहोगे शोर गुल मचेगा तो फिर उनका भजन नहीं हो सकेगा।

शराबी सबकी हानि करता है

देखो एक बात सुनो। एक आदमी १० रुपये रोज कमायेगा। आप सब विद्वान हैं। पढ़े लिखे हैं। और किसान भी हैं। एक आदमी १० रुपये रोज कमायेगा। एक आदमी कमाने वाला और छोटे छोटे बच्चे में स्त्री के ५-६ बच्चे उसके घर में। तो मूल मतलब यह कि ६-७ प्राणी उसके पास खाने वाले। १० रु० एक आदमी कमायेगा मजदूरी से और ५० रु० शराब पीने में खर्च करेंगे। तो आयेगा कहां से। ये आप जितने भी विद्वान हैं हिन्दुस्तान में इनसे बता दीजिए आप कि १० रु० रोज कमाओगे, और ५० रु० शराब में रोज खर्च करोगे आप तो आयेगा कहां से? आपको यह सोचना है। यह बहुत गहन एक विषय है। गहन एक काम है। और इसका हम सबको सोचना भी चाहिये। और नहीं सोचते हैं तो फिर आप जानें।

तो १० रु० आप ने कमाये और ५० रु० आपने शराब में खर्च कर दिये। अब समझ लें कि यह कैसे आयेगा इसको आप जानो। लेकिन यह मैं पूछना चाहता हूँ कि आप सब के सब चाहते हो कि शराब हिन्दुस्तान में बन्द कर दी जाय। (सभी ने कहा हां।) ठीक है। मैं इसके बारे में कल घोषणा करूँगा।

दो करोड़ भजन करने वाले हो गये

२३ मार्च सन् ७७ को जेल से रिहा किया गया था। २१ महीने जेल में रहना पड़ा। इसके बाद १ करोड़ से ऊपर को नामदान दे चुका हूं। १ करोड़ आदमियों से ऊपर लोगों को मैं भगवान का रास्ता लोगों को बता चुका हूँ जो भजन में लग गये। १ करोड़ आदमी हमारे सन ७७ से पहले थे। वे भी इस रास्ते पर लगे हुये थे। और लगभग इतने ही आदमी मैं जब काशी का कार्यक्रम जब तक समाप्त होगा तब तक पहुँचा दूंगा। ऐसी मेहनत कर रहा हूँ कि काम एक दुनियां में हो और उसका लोगों को लाभ भी मिले।

Scanned with CamScanner

भरद्वाज मुनि बसहिं प्रयागा

(जन्माष्ठमी का सतसंग, के० पी० कालेज, इलाहाबाद सायं ५ बजे से २५-८-७८)

सभी त्योहार यादगार के लिए

नव नारियों, बच्चे और बच्चियों, यह कार्यक्रम आपका धार्मिक हो रहा। जन्माष्ठमी के उपलक्ष में। महापुरुषों ने भारत में सुख शान्ति के लिए एक वर्ष के अन्दर बहुत से त्योहार उन्होंने पहले से ही बनाकर के तैयार कर रखे थे। हम सभी लोगों को जो जो त्योहार महापुरुषों ने हम सबके नाम परमात्मा की यादगार, सदाचार प्रेम, दया, और सेवा के लिए जो बनाए उनको हमेशा ताजा करते रहना चाहिए। जब हमने इनके आदर्शों को छोड़ दिया। तो इन त्योहारों से हम लोगों को कुछ भी नहीं मिल रहा। जबकि इन त्योहारों में सब कुछ भरा हुआ है। कोई ऐसी चीज महापुरुषों ने अपने त्योहारों में बाकी नहीं रखी। हर किस्म के देवता उनके सम्बन्ध में और अपने लिए महापुरुषों ने सब कुछ पहले से ही बना बुनु करके करके तैयार रखा था।

त्योहारों पर आध्यात्मिक भोजन

ऐसा महापुरुषों ने किया था कि आप इन त्योहारों पर उपस्थित हो जायेंगे। आप को भरपूर भोजन आध्यात्मिक। एक तो शारीरिक भोजन जिसको आप अपने घर में रोज बनाते हो रोज खाते हो ऐसे ही जरूरत पड़ती है आध्यात्मिक भोजन की। जब हम महात्माओं के त्योहारों में उपस्थित हो जाते हैं तो हमको पूरा आध्यात्मिक भोजन मिलता है। कोई न कोई, कोई न कोई हफ्ते में दो हफ्ते में त्योहार आ गया। फिर भूख लगी अपने भोजन को पूरा किया। नशा चढ़ गया उसी नशे में रहे। शारीरिक काम बच्चों की सेवा, अतिथियों का सत्कार, प्रेम और सेवा और दया यह सब कुछ बराबर भरपूर रहता था। और जब कोई त्योहार आया तो उसमें प्राप्त करते रहे।

आत्मा में बल तथा बुद्धि में विवेक रहता था

इस तरह से हमको भोजन आध्यात्मिक समय समय पर, जरूरत जरूरत पर मिलता रहता था। और हम ऐसे आध्यात्मिक भोजन को खाकर लोक का भी ज्ञान और परलोक का भी अपनी आत्म ओं को जगाते रहते थे। गन्दगी को साफ करते रहते थे। मैल को जमा होने नहीं देते थे। शुद्धता रहती थी। आत्म बल था। बुद्धि में विवेक था। शारीरिक सभी प्रकार के पुरुषार्थ थे। लौकिक और पारलौकिक। वाणी में बड़ी सत्यता थी।

अब त्योहारों को समझ नहीं पाते

यह सब गुण मनुष्य में सम्पन्न थे। हर तरह से मनुष्य को सुख शारीरिक और अध्यात्मिक मिलता था। और अब यह। यह समय हमारे लिए इतना छोटा बन गया कि त्योहारों को समझ नहीं पाते हैं। जीवन की दिन चर्या जान नहीं पाते हैं। सुख के लिए शान्ति के लिए तड़पते हैं। बड़े बेचैन हैं। हर मनुष्य चाहता है मुझे सुख, शान्ति मुझे आनन्द मिल जाय परलोक मिल जाय। मेरी जीवात्मा का कल्याण हो। सांसारिक वैभवों को प्राप्त करके उस आनन्द को पा लें।

Scanned with CamScanner

अमर सन्देश

वर्ष २१ अंक १
अक्टूबर सन १९७८

अब महापुरुष त्योहार की यादगार फिर से ताजी करें

यह सभी आकांक्षाए हम सभी लोगों की धूमिल रह जाती हैं। निराश हो जाती हैं। सब कुछ होते हुए और हमको उससे कुछ मिल नहीं पाता ऐसी दशा में आकर बैठ गये। अब जरूरत है महापुरुषों की। महान आत्माओं की। सत्पुरुषों की। दैविक पुरुषों की। कि हमको छोटी-छोटी, भूली हुई व्यवस्थाएं हमें बतला दे। हमारे त्योहारों की फिर से दुबारा यादगार ताजी करा दें। जो हमको उनसे मिलता था वह हमको मिलने लगे। महापुरुषों की कृपा प्रदान होने लगे। और हम जिस इच्छा में इस जीवन को गुजार रहे वह हमको मिल जाय परलोक का भी इन्द्रियों का भी क्षणिक शुद्ध आनन्द भौतिक प्राप्त हो जाय। इसमें आपको हर प्रकार का लौकिक सन्तोष रहे और पारलौकिक। अपनी जीवात्मा को जगाकर आत्मिक धन भी प्राप्त कर लें। उधर भी आपकी आशा और सम्पत्ति तैयार हो जाय और इधर भी आप यह प्राप्त करें।

महात्मा की जरूरत हर युग में रही

महापुरुषों की जरूरत हर युग हर समय में रही और रहेगी। यह हमको सभी प्रमाण महात्माओं के समय समय पर मिलते हैं और कब कब महात्माओं की जरूरत हम सबको हुई बातें समय समय पर हर युग में बताई गई और ग्रन्थों में लिखा हुआ है। अब भी वही बात हमारे सामने उपस्थित है।

अब स्वाभाविक इच्छा का जागरण हो रहा

हम छोटे से समाज में एक छोटे से परिवार में एक देश में रहते हैं। हम इस छोटे समाज, परिवार और देश से निराश हो गए। रास्ता कुछ दिखाई देता नहीं। विवेक, ज्ञान हमको मिलता नहीं। जो ज्ञान हम प्राप्त समझते हैं कि कर चुके हैं उससे हमको क्या मिल रहा यह हर व्यक्ति उसको अच्छी तरह से समझ रहा कि इससे कुछ मिला। ऐसी सब चीजें देखते हुए आज लोगों को एक अन्दर में स्वाभाविक इच्छा का जागरण हो रहा कि हमको कुछ लोक में मिला। हम बिल्कुल खाली से जा रहे हैं। जिस लिए हम आए थे वह चीज हमको यहां मिल रही। ऐसी मनुष्य में निराशा हो रही और इसके लिए महात्माओं की जरूरत है।

अवतार आते हैं

मैं यही समझता हूं कि भारत में जब मनुष्य उस प्यास और अशान्ति में जब भटकता है फंसता और जलता है तो कोई न कोई अवश्य आते हैं। और ऐसी वर्षा, उस वर्षा, ज्ञान उपदेश सत्य उपदेश, आशा का उपदेश, एक सचाई का उपदेश, प्रभु मार्ग का उपदेश, आत्म विकास का उपदेश भौतिकता का जो वास्तविक उपदेश लोगों को सुनने को मिलता है। और उससे जो उसकी इच्छा है, दबी हुई है, वह सब बाहर आती है। और उन इच्छाओं का फली भूत, आनन्द मिलता है। तब वह विश्वास करता है ईश्वर पर देवताओं पर और महात्माओं पर।

इस समय पर अविश्वास कर दिया गया

नहीं तो ऐसा विश्वास इस समय पर ऐसा कर दिया गया ईश्वर, देवताओं और महात्माओं के प्रति कि, बल्कि जो धर्म पुस्तकें हमारे सामने हैं उनके प्रति भी इतना अविश्वास कर दिया गया है कि यह कुछ नहीं हैं। धोखे बाजों ने लिखी हैं। यह धोखे बाजों के आचरण थे।

अविश्वास से काम बनता नहीं

इस तरह मानव में अविश्वास हो जाय

Scanned with CamScanner

तो रास्ता किनारे लगता दिखाई देता नहीं। तब फिर मनुष्य अन्धकार झाड़ियों में उलझ जाता है।

महात्मा ही सब देते हैं

यह जन्माष्टमी का शुभ उपलक्ष महात्मा की यादगार महापुरुषों को दुबारा साथ दी। उन्होंने हमको बहुत कुछ दिया। अब भी देंगे। देते भी हैं और भविष्य में भी देंगे। और हर मनुष्य अपनी अपनी स्वाधीन स्वतन्त्रता का अधिकारी जिम्मेदार है कि वह अपना अपना समय मनुष्य जीवन का उपयोग में ले। लाये। उसको एक क्षण भी व्यर्थ न जाने दे। यह मानव की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। हर मनुष्य को यह अधिकार मिल चुका है। और वह समय पर अपनी अपनी जिम्मेदारी ग्रहण कर लेगा। कर लेता है और जिसकी खोज में आया हुआ है। उसमें लग जाता है।

कपड़ा एक मर्यादा है

शारीरिक रक्षा एक मर्यादा है शरीर ढकने की। आपने बहुत लोगों को देखा है जो नंगे रहना सीख जाते हैं। बर्दाश्त कर लेते हैं। गर्मी बरसात जाड़ा। वे नंगे रहते हैं। उन्हें कोई असर नहीं पड़ता है। न जाड़ा, न गर्मी न बरसात। लेकिन नहीं। एक मर्यादा है। कपड़े सुशोभित एक पोशाक स्त्री पुरुष बच्चों के लिए था। नंगा आदमी हो तो उसको कोई अच्छा नहीं कहता। न वह अच्छा लगता है। हर जगह ऋषियों मुनियों महात्माओं ने एक व्यवस्था बनाई। जब कपड़े नहीं थे तो छाल बना दी। छाल से ढक लेते थे।

लेकिन जब धीरे धीरे, धीरे धीरे जब विकास बुद्धि का शरीर रक्षा के लिए होने लगा तो कपड़े भी बनने लगे और अब यह शोभा मनुष्य की होने लगी।

व्यवस्था सुख और आनन्द के लिए होती है

तो व्यवस्था महात्माओं ने सुख के लिए बनाई थी। उसी में साथ साथ सुन्दरता भी थी। दोनों बात थी। बाहर की सुन्दरता का यश और अन्दर की सुन्दरता का आनन्द। ये दोनों प्राप्त करते थे। ऋषियों मुनियों ने जो बातें हमको चेतना के लिए बताई थी उसको अब आपने छोड़ दिया।

अब आप सब एक नई बात सुनें। मैं कोई नई बात न पहले करता था न अब।

भरद्वाज मुनि यहीं बसते थे

भरद्वाज मुनि बसे प्रयागा।

जिन्हें राम पद अति अनुरागा।

राम के चरनों में उनका प्रेम था। विशेष अनुराग था। ये दर्शन साक्षात कार करते थे। यहां उनकी गोष्ठी समाज उनके जिज्ञासुओं का भक्तों का, प्रेमियों का अच्छे श्रद्धालुओं का लगता था। उस परम तत्व का उपदेश ज्ञान का लौकिक और पार लौकिक इसी प्रयाग राज भूमि में। कोई ज्यादा दूर नहीं। उस समय तो यह जंगल था। अब भी निकट में खेती दिखाई देती है।

यहां सब जंगल था

मैं पहले जब इलाहाबाद आया हुआ था तो यह सब स्थान खेतियों का था। तब यहां कुछ नहीं सब जंगल ही जंगल था। स्यार बोला करते थे।

महात्मा के पास ज्ञान गोष्ठी होती थी

तो कहने का मतलब यह है कि उस समय पर प्रयाग राज जो स्थल ऋषियों मुनियों का होगा वहां ज्ञान गोष्ठी करने दूर दूर से लोग चल कर आते थे। और सीखा करते थे। यहाँ पर एक जंगल के रूप में था। क्यारियां थीं। कितना सुन्दर और रमणीक एक स्थान।

Scanned with CamScanner

और इतने बड़े परम तत्व की व्याख्या। उस आनन्द की साधना। इन्द्रियों का निग्रह और काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार का दमन। यह सब उन तत्व दर्शियों से लोग सिखा करते थे। यह उन ऋषियों मुनियों और महापुरुषों के ही ऐसे स्थल, स्थान ये निर्माण किये हुये हैं। उन्होंने इन पर्वों को लगाया था जो चले आ रहे हैं प्रयाग राज के रूप में। हर वर्ष यह कुम्भ के रूप में मनाया जाता है कि वहां पर स्नान होगा।

जीवन न मालुम कब उलझ जाता

तो इसलिए हम लोग दूर दूर से चल कर आते हैं कि ज्ञान गोष्ठी कुछ होगी। महापुरुषों ऋषियों का दर्शन हो जायेगा। तत्व की बातें सुनने को मिलेगी। और यह जीवन न जाने कब उलझ जाय। बुरे आदमी का न मालुम कब ठोकर लगे और परिवर्तन हो जाय और होता भी रहा। अब भी होता है और आगे भी होगा। पता नहीं कहां किस जगह चलते चलाते किस स्थान पर क्या हो जाय। यह लोगों को देखने को मिल रहा।

सबहिं सुलभ सब दिन सब देसा

इसीलिए महात्माओं ने एक अमुक स्थान जगह जगह पर ताकि लोगो को सब दिशाओं में सुविधा प्राप्त हो जाय। सबको लाभ हो। महात्मा चारो तरफ चलकर पहुंच जांय। वे ज्ञान गोष्ठी का अपना उपदेश करे और मानवता का पाठ पढ़ायें और वे जिस तत्व में जिस योग में ऋषियों मुनियों ने जिस मानव अधिकारों को बताया यह कर्म करने का जो अधिकार आप को भगवान ने दिया है वह क्या क्या है। और किसको करना है और किसको नहीं करना है। यह जगह जगह पर पूरब पच्छिम उत्तर दक्षिण यह सब दिशाओं में होते रहे हैं। और हम लोग इसके लिए लालायित और जिज्ञासू रहते थे। धन को धन नहीं समझते थे और समय को समय नहीं समझते थे। क्योंकि इनमें धन और कोई समय नहीं। यही परम समय और परम उपयोगी धन है। और अपना समय और सेवा है।

ऊपर चलने में अकस्मात मिलती है

तो ऐसे समय में हम लोग उपस्थित होते हैं। इनको कुछ नहीं। ये तो सब भगवान की लीला समझते थे। जब हम उस ओर चलेंगे तो ये चीजें अकस्मात शरीर रक्षा के लिए जो उन्होंने हमको दिये हैं वह हमको मिल जाया करेगी।

प्रकृति सुविधा देती है

और ऐसा होता भी था कि हम लोग उस आश्रित में होते थे। उस भगवान विश्वास में जाते थे। कर्तव्यशील बनते थे। जो भी सुविधायें यह प्रकृति जिसे जल, पृथ्वी, अग्नि वायु आकाश कहते हैं ये सब अपने अपने देवता अपना अपना काम करें। और मनुष्य की सभी जरूरतों को पूरा करें। और हम लोगों को इन सभी कष्टों से निवारण हो जाया करता था। और हम लोग सबके सब शरीर में रहते हुये एक सुख, एक आनन्द का, एक शक्ति का, एक ज्ञान का स्फूर्ति का, स्वास्थ का, एक अनुभव करते थे। तब हम लोगों में कितना बड़ा विश्वास था।

लेकिन अब इन दिनों में भोग अवश्य आया। उस भोग ने हम सबको बर्बाद कर दिया। वह भोग चाहे हाथ का हो, चाहे कान का हो चाहे जिभ्या का हो। किसी का भोग हो भोग तो भोग ही है।

तो भोग में बिमारियां और भोगों में

अशान्ति। यह तो आप ने देखा। यह जन्माष्टमी का अवसर है। इसके सम्बन्ध में हम थोड़ा सा कुछ कहना चाहते हैं। आप इसको ध्यान से सुनें।

संख्या में कितने भी आओ कोई बात नहीं

मैं तो एक सीधी बात यह जानता हूं। जितने लोग यहां पर बैठे हुये हैं। पिछले सन सत्तर के पहले यहां पर जन्माष्ठमी की गोष्ठी यहां के कार्य कर्ता, आचार्यों ने दे दी। तब से आप यहां कितने गुने ज्यादा हैं। सब लोग अपने अपने भाव में, अपने अपने विचार और अपनी अपनी शान्ति में आते हैं और चले जाते हैं। लाखों आओ। करोड़ों आ जाओ इससे क्या होता है। वह तो एक व्यवस्था है जो प्रेम के साथ में। इसमें किसी तरह की कोई बाधा नहीं है। सब को सब तरह का इसमें सुख मिलता है।

एक सुख है और एक दुख है

तो कहने का तात्पर्य यह है कि महात्माओं की बात को हमेशा सुनना चाहिये। ऐसी कभी अवहेलना नहीं करनी चाहिये। क्योंकि महात्माओं की बात अवहेलना के रूप में होती है अपमानित तो यह समझना चाहिये कि हमको कष्ट मिलने के संकेत मिल चुके। जब महात्माओं के सम्मान की भावना होती है तो यह हमेशा समझना चाहिये कि हमें सुख के संकेत मिल रहे हैं। और हम उस सुख की तरफ चलेंगे। एक दुख और एक सुख। दो चीजें तो मानव की यहां हैं। और इसी के साथ साथ में तीसरी अपनी आंख है। रक्षा की बात है। जो जरूरी है, जो महान जरूरी है। अतिशय जरूरी है और वही है असली काम। बाकी तो सब काम इस शरीर के साथ समाप्त हो जायेगा। तो उसको भी शरीर के साथ हीसाथ पूरा करना है। इसलिए जन्माष्टमी की गोष्ठी को आप सुनिये। सबसंग को सुनिये आप।

सभी महात्माओं ने एक ही काम किया

महापुरुषों की सभी बातों को याद कीजिए। चाहे हिन्दू हों चाहे मुसलमान हों चाहे ईसाई हों। अपनी अपनी जबान और भाषा में सभी महापुरुषों ने अपना अपना काम इन मनुष्यों के लिए किया। और सब ने एक ही काम किया। सबने सचाई का काम किया। सत्यता का किया। आत्मा के लिए जीव के लिए रूह के लिए, किया। सभी ने एक शारीरिक समाज सुख के लिए लोगों के लिए, सेवा के लिए। वह किसी की भाषा में बोलें।

मानवता प्रधान चीज है भाषा नहीं

काम सबका एक ही होता है। अलग अलग नहीं। हम भाषाविवाद में चले जाएँगे तो हम टकरा जायेंगे। मानवता में आ जाएँगे तो भाषा हमारी बदल जाती है लेकिन मानव सो सारे देश में। मानव एक ही है। उसके काम एक ही है। तो मानव में आना चाहिए भाषा विवाद में नहीं आना चाहिए। और मानव के जो काम हैं वह हमको करना है। मानव का जो एक दूसरे से सुख और शान्ति, प्रेम, सेवा सत्यता होती है, उससे आह्लाद और आनन्द मिलता है, वह हमको एक दूसरे से लेना चाहिए वही चीजें रूहों की हैं बाकी और की चीजे आपको कहीं भी मिल सकती है।

यह नया नहीं है सब पुराना ही है

इसलिए सिवाय दुख तकलीफ संताप के और कुछ मिलने जुलने वाला नहीं है। तो भाषा विवाद में मत फंसो। मानवता में आओ। भाषा तो यह आपको कभी विवाद में नहीं फँसाती। महापुरुषों का वह प्रेम मानवता का है। वह सबको बढ़ाया जाता है उसी को ले आना चाहिये। और हम वही बात आपको सुनाते है।

Scanned with CamScanner

हर युग में कलयुग लगा था

ठीक है वर्तमान का समय हमको हमारी शिक्षा को नवीन बता दे, लेकिन इतिहास नवीन नहीं बताएगा। इतिहास वही बताएगा महापुरुषों की धर्म पुस्तकें वही बताएँगी जो सतयुग में था, त्रेता में था, द्वापर में था, कलियुग में था, और भविष्य में भी है। सतयुग में भी कलयुग लग गया था। त्रेता में भी कलयुग लगा था। द्वापर में भी कलयुग लगा था, और अगर सतयुग द्वापर, त्रेता में कलयुग न लगता तो उसका बोध उसका ज्ञान अच्छाई, बुराई का सबयुग में न होता। क्योंकि सतयुग में सब सत्यवादी थे सब चरित्रवान सब निरोगी सब सुन्दर थे लेकिन वह भी समय इस प्रकार का ऐसा आया।

तो हर युग में ऐसा बोध उस अच्छाई बुराई को कराने के लिये आया करता है। सतयुग में भी था, त्रेता में भी था, चाहे वह क्षणिक हो। चाहे क्षण मात्र के लिए हो वह अलग हो सकता है। उससे थोड़ा और ज्यादा त्रेता में हो थोड़ा ज्यादा द्वापर में हो, और फिर उसका भरडार कलियुग में हो लेकिन हर युग में हर चीज का।

न हम नये हैं न नयी बात बतायेंगे

तो यह बात यह है, कि इतिहास में बातें आपको बताया जाता है हम न कोई नए हैं न कोई नई बात करेंगे। न नया रास्ता बताते हैं न कोई साधना नयी बताते हैं। न कोई ध्यान नया बताते हैं। न कोई भगवान का मिलन नया बताते हैं। है सब चीज पुरानी भूल गए हो इसी कारण आप उसको नहीं समझते हो, जब जान जाओगे तब कहने लगोगे कि यह सब चीजे पुरानी थी। तो आज के युग में हम लोग रास्ता भूल गए थे। तब नई कह रहे थे रास्ते पर आ गए तो पुरानी। तो आप बड़े ध्यान से सुनें। सतसंग आपको सुनायेंगे।

महापुरुषों का परिश्रम

महापुरुष आपको क्या देन देते हैं और कितनी मेहनत करते हैं। महापुरुषों का जो परिश्रम है वह जब बाद में लिखा जाता है तो लोग दांतों तले ऊँगली दबाते है और वे लोग दांतों तले उंगली दबाते हैं जो आगे आएंगे। आपको अभी वर्तमान में अभी कुछ नहीं है।

वर्तमान के लोगों को समझना होगा

राम के सत्य को वर्तमान के लोगों ने नहीं समझा लेकिन जब वर्तमान के लोग जो उनके समय में समाप्त हो गए, बाद में आए और उनका इतिहास बना, तब लोगों ने समझा ओ हो कितनी यातनाएँ लोगों ने सही।

वर्तमान के महापुरुष लाश पहुँचायेंगे

कृष्ण हुए, महावीर हुए, बौद्ध हुए, ईसा मसीह हुए, मुहम्मद हुए, इत्यादि इत्यादि कबीर रैदास तुलसीदास, जितने महात्मा हुए उनको उस समय के लोगों ने उन्हें नहीं समझा लेकिन बाद के लोगों ने उन्हें क्या समझा, बाद के लोग समझें।

तो इसलिए बाद में फिर आपको कुछ भी नहीं मिलेगा। जो कुछ भी मिलेगा वर्तमान के लोगों से मिलेगा। यह बात ठीक है कि राम भी बहुत अच्छे थे, कृष्ण भी बहुत अच्छे थे योगी थे पूजनीय थे। पूजना चाहिए, उनकी हर बात को मानना चाहिए और हर बात पर हर काम पर आंसू बहाना चाहिए। कृष्ण बहुत अच्छे थे, योगी थे, कबीर बहुत अच्छे थे। मुहम्मद बहुत अच्छे थे इसमें कोई सन्देह नहीं। ईसा मसीह बहुत अच्छे थे, जितने भी महात्मा हिन्दू मुसलमान इसाईयों में आए सब बहुत अच्छे थे। हमको उनके नाम पर रोना भी

Scanned with CamScanner

चाहिए। लेकिन यदि यह चाहें आप कि वह हमको मुक्ति दे देंगे, वह हमको मोक्ष दे देंगे, कल्याण कर देंगे, हमारे पापों को क्षमा कर देंगे तो यह नहीं हो सकता। अब वर्तमान का आपको मुहम्मद चाहिए। वर्तमान का आपको ईसामसीह चाहिए। वर्तमान का आपको राम चाहिए। वर्तमान का आपको कृष्ण चाहिए। वर्तमान का महावीर चाहिए। वर्तमान का ईसामसीह चाहिए और वर्तमान के बौद्ध चाहिए। वर्तमान के तुलसीदास, वर्तमान के कबीर चाहिए। और वह अब आपको मिल नहीं सकता। क्यों कि ठीक है बहुत अच्छे डाक्टर थे। बहुत अच्छे विद्वान हुये। आपको वह नहीं कुछ पढ़ा सकते। वर्तमान के लोग कालेजों में स्कूलों में चाहे धार्मिक हो चाहे वह आपकी लौकिक, भौतिक विद्या हो। वर्तमान के लोग पढ़ायेंगे। पिछले जितने भी कुछ जानने वाले थे वह आपको बताने के लिए नहीं आएंगे। यह सिद्धान्तन बात है और यह अकाटय है, कटने वाली नहीं। इसको तो आपको मानना ही पड़ेगा।

न उनको देखा न जानते है

तो इसलिए हम लोग वर्तमान से लाभ नहीं लेते हैं। हम लोग यह चाहते हैं कि उनको आपने देखा नहीं। आपके जमाने में भी नहीं हैं। बहुत वह समय लाखों वर्षों का निकल गया। हजारों वर्षों का निकल गया। उनको आपने देखा नहीं। काले थे, सांवले थे, क्या था। क्या नहीं था। लेकिन यह है कि यह थे जरूर।

उन किताबों को देखना चाहिये

अब हमको यह समझना चाहिए कि उन किताबों में क्या लिखा हुआ है जो हमेशा आते रहते हैं। समय-समय पर आते रहते हैं जब जैसी जरूरत पड़ती है। तो आते रहते हैं। महान आत्माएं आती हैं। योगी आते रहते हैं। अवतारिक शक्तियां आती रहती हैं। यह आप की किताबें बताती हैं। और वह किताबें सत्य कहती हैं। असत्य नहीं कहतीं और इन्हीं से ही भला होगा। तो हमने उनको भी मान लिया उनकी किताबों को मान लिया तो किताबों को भी मान लिया। उसमें जो बोध लिखा था उसको भी मान लिया हमने उसको भी मान लिया। उसको भी मान लिया और उनको भी मान लिया।

जब वर्तमान को नहीं मानते तो पिछले को भी नहीं मानते

हमने सबको फिर मान लिया। और जब हम वर्तमान के लोगों को नहीं मानते तो न उनको मानते न उनकी किताबों को न उसको मानते। तो आप यह बात समझ लें। इसे समझना पड़ेगा और मानना ही पड़ेगा। समय आने पर सब कुछ हो जायगा। तो आप सतसंग सुनिए जन्माष्टमी का सतसंग।

हमारा शरीर लोहे का नहीं है

ये अभी ३-४ दिन से निकला था। हवा पानी के तबादला होने से, बदलने से यह शरीर तो जैसे आपका वैसे हमारा। हमारा तो कोई लोहे का नहीं है। आप ऐसा समझते हो कि बाबा जी का लोहे का, होगा। तो आप समझते जरूर होंगे क्योंकि यह मेहनत ऐसी है लोहे से भी ज्यादा मेहनत है। आप तो यह समझते होंगे इनको बुखार आने की क्या जरूरत है। इनकी तो तबियत कभी खराब नहीं होगी। तो मुझे भगवान ने तो लोहा बनाकर नहीं भेजा। यह हाड़ मांस का है। जो जल आप पीते हो वही मैं पीता हूं। जो आप के लिए है, और बुरा नुकसान कर सकता है वह मेरे लिए भी कर सकता है। हवा चल रही है सबके लिए है। मुझे भी नुकसान पहुंचा

Scanned with CamScanner

सकती है। गर्मी उधर से लू चल रही है मुझे भी लगती है आपको भी लगती है। तो यह तो नहीं कि मैं लोहे का हूँ मुझे नहीं लगेगी आपको लग जायगी। ऐसी बात नहीं। जल, पृथ्वी, अग्नि, वायु, आकाश का बना हुआ सबका शरीर है। और लोहू का! उनमें सभी विकार समय आने पर हो जाते हैं। इसलिए मैं तो अब आज कई दिन हो गए मैंने भोजन तो किया नहीं। लेकिन आपको तो पूरा लाभ पहुँचाऊंगा ही इससे क्या मतलब है। आपको तो मतलब से मतलब है। तो ध्यान देकर के सुनें आप। सतसंग की बातों को।

सतगुरु किसको कहते हैं

सतगुरू कहें करो तुम सोई।
मन के कहे चलो मत कोई॥

पहले तो यह है कि सतगुरू। सतगुरू कहते किसको हैं उसको समझ लेना चाहिए। जो सत्त से जुड़ा हुआ हो। परमात्मा की चेतन सत्ता को जो पा चुका हो। जिसने अपनी जीवात्मा को जगाकर और चेतन सत्ता से सम्बन्ध कर लिया उसको कहते हैं सतगुरु। सतगुरू कोई हाड़ मांस का नहीं है कि चलो हमने स्थूल का पांच तत्वों का एक पुतला है उसको सतगुरू मान लिया। वह सतगुरू नहीं है। जो उसमें बैठा हुआ है उसने अपने को जगाकर के उस सत्त से, उस चैतन्यता से, प्रकाश से, रोशनी से, Light से जो जुड़ मिल गया है। और उसका वह खजाना बन गया उसको कहते हैं सतगुरु। "सतगुरू कहें करो तुम सोई।" ऐसी महान आत्माएं समय समय पर जो निर्देश आदेश दें उसको हमें करना चाहिए। वह हमारी भलाई के लिए, हमारे लाभ के लिए जिस तरह से भी हो सकता है हमारा फायदा हो वही काम करते हैं। वह कोई भी किसी तरह से आपका नुकसान नहीं चाहते।

मन के कहने में कभी नहीं चलना चाहिए

तो "सतगुरू कहे करो तुम सोई, मन के कहे चलो मत कोई।" मन के कहने में कभी मत चलो क्यों कि मन तो आपको प्रपंच में फंसायेगा। धोखे में ले जायगा। विकारों में गिरा देगा। कभी काम से, कभी क्रोध से, कभी लोभ से, कभी मोह से, कभी अहंकार से। तो आप तो इसमें गिरकर चकनाचूर हो जाओगे और रोओगे चिल्लाओगे। तो मन तो धोखेबाज है वह तो धोखा देगा ही और वह चाहते हैं कि मन के धोखे से छूट जाओ। आप उस चेतन्यता के साथ जुड़ जाओ तो काम आपका बन जाय हमेशा के लिए। ताकि जन्मने मरने का चौरासी और नर्कों के जाने का। अनेक प्रकार की जो यातनाएं अपने अपने किए हुए कर्म के अनुसार जो आपको मिल रही हैं वह मिलेगी ही। उससे तो आपको छुटकारा हो जाय। उससे बरी हो जांय आप। निवृत्ति आप पा जांय।

जो वे कहें वही करना चाहिए

तो "सतगुरू कहें करो तुम सोई"। वही काम करना है। और बहुत संभलकर सावधान होकर के, सचेत होकर के जो महापुरुष वचन सुनाएं उसको हमेशा चौबीसो घण्टे याद रखो। जब जब भी जरूरत पड़े तब वह सामने आ जाती हैं। याद करने की कोई जरूरत नहीं। आपको इस मस्तक खजानें में चीजें भर दीं। जब समय आता है तो बचन याद हो जाते हैं इसलिए आपको जानकारी रख दी हैं। और जब वह बचन याद आ जांय तो फिर काम ले लो। जब जब जरूरत पड़ती है तो फौरन बचन याद आ गए और उससे आपने काम ले लिया बुराई निकल गई। जब बुराई समझ गए अच्छाई के तरफ चले गए। बुराई को छोड़ दिया।

Scanned with CamScanner

मन तो इसी संसार में गोते खिलवाता रहता है

तो "सतगुरु कहें करो तुम सोई"। वही काम करो जिसमें तुम्हारा लाभ हो। अनहित न हो। हित हो अनहित न हो। ऐसा काम करो लेकिन उनकी बात को छोड़कर के मन के कहने में चलोगे तो फिर तो यह बड़ा भारी दुश्मन है। बड़े बड़े लोगों को इसने चकनाचूर कर दिया। और क्या नहीं किया। तो सब किताबें इसी के लिए तो भरी हुई हैं। हम लोग इस पर सोचते और समझते नहीं हैं कि जो वह कहते हैं वह करते नहीं हैं। जो वह नहीं कहते हैं वह करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। कैसे भलाई होगी। क्योंकि महात्मा तो प्रेम देते हैं। सख्ती तो करते नहीं। सख्ती करें तो दो दिन में ठीक कर दें आपको मार पीटकर के। लेकिन आप रोओगे चिल्लाओगे तो कड़ाई का काम तो महात्मा करते नहीं। वह तो दयालु हैं। वह तो प्रेम से कराना चाहते हैं कि अपन आप मुड़ जाओ। जब प्रेम में बंध जाओगे तो मुड़ जाओगे। और बात मानने लगोगे तो बुराई छोड़ दोगे। अच्छाई के रास्ते पर चलोगे।

जब काम से छुट्टी पाया तो भजन करो

दिन में काम किया शाम को आए बच्चों की सेवा की और फिर उसके बाद जब कोई समय नहीं हुआ तो बैठ गए भजन में। लो, काम बनने लगा आपका। उधर काम किया कि मेरा काम है। दफ्तर में हो, खेती का हो। खेती का काम क्यों अपना समझते हो। उसी तरह से दफ्तर का काम हो तो दफ्तर का काम अपना समझो।

शाम को आए बच्चों की सेवा की कोई किसी के यहां गए उसने अतिथि बनकर सेवा कर दी। और आप के यहां कोई आया तो आप ने उसकी सेवा कर दी। जब कोई काम, समय न हुआ काम का, तो बैठ कर के भजन पर बैठ गए। भाई काम होने लगा। यह कहते हैं सतगुरु। "सतगुरु कहें करो तुम सोई। मन के कहे चलो मत कोई"।

संसार में क्या मिलेगा आप को

अब न दफ्तर में काम करोगे, न खेती में करोगे, न दुकान में काम करोगे, न बच्चों की सेवा करोगे और इन्द्रियों के दरवाजे पर मन को घोड़े की तरह सवार करके भगाओगे। तो संसार में क्या मिलेगा आप को? आप को तो कुछ मिलने वाला नहीं।

यह बालू का सूखा मैदान है

यह बालू का सूखा मैदान है भागते चलो कुछ भी मिलने वाला नहीं है। पानी तो जरूर मालूम होगा कि भरा हुआ है लेकिन दौड़ते जाओगे, दौड़ते जाओगे, दौड़ते जाओगे कहीं कुछ नहीं मिलेगा। यह है मन को इन्द्रियों पर सवार कर दिया अब भागता चला जा रहा। भागता चला जा रहा। भागता जा रहा। आंख से मिल जायेगा। कान से मिल जायगा। वाणी से मिल जाएगा यह मिल जायेगा वह मिल जाएगा लेकिन कुछ नहीं।

सच्ची दिनचर्या यह है

कहते है तुमको क्या बताया कि काम करो दिन में। शाम को बच्चों की सेवा की। जो वहां काम किया उससे जो कुछ भी आप को मिला अनाज के रूप में, या किसी और चीज के रूप में उसको ले आए। बाजार में दुकाने लगी हैं उनसे सामान खरीद लिया। शरीर की रक्षा के लिए कपड़ा अन्न। और चीजें भी। इसकी रक्षा करो। बच्चों को भी दे दिया सबको।

भजन बहुत जरूरी है

तो यह काम बच्चों का भी हो गया शरीर

का भी हो गया। और जो इसमें बैठा हुआ जीवात्मा उसके जगाने के लिए भजन। अपनी जीवात्मा को नाम के साथ जोड़ दो। "सतगुरु कहें करो तुम सोई"। वह काम करना है। यह नहीं कि हमको भजन नहीं करना। हमको काम ही नहीं करना हमको सेवा ही नहीं करनी। तो क्या करना।

सेवा करो भी तब लो भी

सेवा लेने के लिए तैयार हो। करने के लिए तैयार नहीं कैसे काम हो। जब तुम लेना चाहते हो तो सेवा करना भी चाहिए। यह सेवा का अदला बदला है। तुम किसी की सेवा करोगे वह तुम्हारी करेगा किसी की इज्जत करो तो वह आपकी इज्जत करेगा। किसी से प्रेम करोगे तो वह आपसे प्रेम करेगा। आप किसी को मारोगे वह आपको मार देगा। यह तो लेना देना है और क्या। तो फिर मारने पीटने से क्या होगा वह तो आप जानते हो। और करने से क्या होगा वह आपको मालूम है। एक दूसरे की सेवा करते हो वह आपको पता है। तो अच्छी बात जो सतगुरु कहते हैं उसको करना चाहिए। और जो मना करे उसको कभी नहीं करना चाहिए। मोटी बात तो यही है।

मन और आत्मा एक ही रास्ते से आये

वह भय में गोते दिखवावे।
सतगुरु से बेमुख करवावे॥

कहते हैं जब कहते हैं यह दुश्मन हो गया है। यह दोनों एक ही रास्ते से उतर कर आए। मन ने ऊपर से अपना स्थान छोड़ दिया और जीवात्मा और ऊंचे से वहां से आई। दोनो रास्ते में मिलाप करा दिये गए। मन से और जीवात्मा की एक तरह की दोस्ती हो गई। जब आए थे तब तो पक्के दोस्त थे। जैसे आपसे किसी से दोस्ती कराई जाय साल, दो साल, चार साल तो खूब अच्छे मित्र रहते हो। लेकिन बीच में कोई बात नहीं बनी तो खटक गई। तो बस दुश्मन हो गए। ऐसे ही मन सुरत, जीवात्मा के साथ मन को लगा दिया। जब आई थी तो बड़ी मित्रता थी। बिना कुछ कहे हुए मन और बिना कुछ कहे हुए सुरत कोई काम नहीं करते थे। लेकिन धीरे-धीरे, धीरे-धीरे, धीरे-धीरे, धीरे-धीरे, धीरे-धीरे यह मन जब इन्द्रियों के भोगों का आदि बन गया और जब जीवात्मा ने इसको मना किया कि यह क्या करते हो? तुमको भी तकलीफ उठानी है मुझको भी उठानी है क्योंकि विधान बन गया। ईश्वरीय विधान कि तुम इस काम को करोगे तो तुमको भी नर्क में जाना मुझको भी जाना। उसमें तो चार खानें चौरासी लक्ष योनियां बना दीं। तो फौरन यह नाराज हो गया कि हम तुम्हारा कहना मानेंगे नहीं। और हो गया खिलाफ। अब यह जीवात्मा का, सुरत का, यह मन सुन नहीं देता।

महात्मा का कहना मान लो

तो महात्मा कहते हैं महापुरुष कहते हैं सतगुरु कहते हैं भाई तुम कहना मान लो और नहीं तुम कहना मानोगे तो यह भव में गोते दिखवावे। और गुरु से विमुख करवाये क्योंकि गुरु चाहते हैं मन की और जीवात्मा की दोस्ती हो जाय और दोनों के दोनों नाम के साथ जुड़कर के ऊपर चले जांय अपने घर में। वहां वे आराम से रहें न वहां चौरासी है, न नर्क है, न वहां पाप है, न पुण्य है, न अच्छा है, न बुरा है कुछ नहीं। सभी झगड़ों से छुट्टी हो जाय आपकी। वह तो यह चाहते हैं।

मन के कहे मत चलो

लेकिन यह मन नहीं चाहता। तो मन

किधर ले जायगा? वह जो। चलो गोते खाओ चलो जन्मो मरो। चलो नर्कों में चलो। चलो चौरासी में आओ। चलो यह होओ, तुमको यह योनि मिले। इस तरह से यह सब खान में ले जाता है, गिरा देता है। ऐसा काम मत करो। उसके कहने में मत चलो। जो गुरु कहें जो महापुरुष कहें महान आत्मा कहें उसको मानना चाहिए और जिसको सजा करें। उसे मत करो।

काल किसको कहते हैं

काल चक्र में डाल घुमावे।
मोह जाल में बहुत फंसावे॥

काल किसको कहते हैं कि जिसने यहसब चीजें दी। काल नाम उसी का है जिसने यह चीजें दे दीं। और यह चीजें हम रोज देखते हैं। रोज काम में लेते हैं। रोज उसका क्षणिक आनन्द लेते हैं। और बिना इत्तला दिये हुए कहता है चलो। चलो अभी। चलो छोड़ो इनको।

आपका इनसे लगाव हो गया है

तो अब आप ने इनसे प्रेम किया है। अपना समझा है। मकान को, बच्चों को, स्त्री को, इनको, दोस्तों को, मित्रों को, माता पिता को। यह सब चीजें आपने अपनी समझीं। इतने दिनों से आपने इनसे मुहब्बत प्रेम कर लिया। तो अब एकाएक कहता है चलो इनको छोड़ो अभी। इसी वक्त। अभी एक मिनट में छोड़ दो। इसको कहते हैं काल। देने के बाद यहां बिना दया और रहम के तत्काल तुरन्त शीघ्रग शीघ्र एक मिनट के अन्दर सब चीजों से अलग कर दें उसको कहते हैं काल।

मनुष्य शरीर किराये का मकान है

यही बात बाबा जी आपको याद दिलाते हैं कि मनुष्य शरीर एक किराए का मकान है। और मकान मालिक जब समय पूरा हो जायगा तो एक मिनट के अन्दर खाली करायेगा। फिर उसको जरा भी दया और रहम नहीं। खाली अभी कर दो इसी Time पर। तो कहेंगे फिर लेने दीजिए। कहीं कुछ नहीं। जहां बैठे हो, खड़े हो, चलते हो, खेत में काम करते हो, देश में हो, परदेश में हो, कहीं भी हो। बस अभी खाली कर दो इसी वक्त। मिलना जुलना किसी से नहीं।

ऐसी जगह डालेगा कि रोते रहोगे.

इसको कहते हैं। काल। "काल चक्र में डाल घुमावे"। ऐसी जगह पर जाकर के तुमको डाल देगा कि रोज जन्मो। रोज मरो, रोज जन्मो, रोज मरो, रोज जन्मों, रोज मरो। और जन्मत मरत दुसह दुख होई।

जन्मने और मरने की इतनी अत्यन्त पीड़ा। तो महात्माओं ने कलम को बन्द कर दिया कि यह लिखी नहीं जा सकती ऐसी पीड़ा होती है। और जिसको होती है वही जानता है। तो यह पीड़ा कब पता चलती है जब साधना करते हैं।

साधना में नाम के साथ जोड़ते हैं

जब साधना करते हो तो जीवात्मा को, मन को नाम के साथ जोड़ते हो और जब शब्द ने, नाम ने ऊपर को खींचा और यह सब बदन जब टूटा घड़ा घड़। जैसे मालूम होता है चड़–चड़–चड़–चड़ सूखी लकड़ी टूटती है। तब आपको उसका ज्ञान होता है कि जन्मने और मरने में कितनी पीड़ा होती है।

साधन में तोड़ा जाता है

तो साधन के करने में वह पीड़ा जो बर्दाश्त हो जाती है उसका अनुभव हो जाता है। लेकिन अकस्मात अगर आपका बदन तोड़ा जाय तो कितनी पीड़ा होगी। यह तो आपको सोचना चाहिए। इच्छा से जो बदन टूटता है उसमें अनुभव होता है। लेकिन बिना

Scanned with CamScanner

इच्छा के और अकारण। यानी हमको बताया नहीं कहा निकालो। तब तो हमारी हड्डी-हड्डी का क्या हाल होगा हमारी नसों को तो जिसको तकलीफ होती है वही जानते हैं।

जन्म और मरण की पीड़ा होती है

इसलिए मन काल चक्र में तुमको डाल देगा। ले जाकर के। और वहां जन्मने मरण की अत्यन्त पीड़ा होगी। इसलिए ऐसा काम मत करो। जो सतगुरु कहें करो तुम सोई और मन के कहे चलो मत कोई।

काल ने धर्म के रास्ते से छुड़ा दिया

आज यह जो छुड़ा दिया आपको धर्म के रास्ते से, महात्माओं से अलग कर दिया उसका कारण भी यही है। अरे भाई महात्मा और क्या कह रहे थे। गृहस्थी आप से छुड़ाते नहीं। कपड़े आपसे छुड़ाते नहीं। कोई खाना छुड़ाते नहीं। रिश्तेदारी छुड़ाते नहीं थे। ब्याह शादी छुड़ाते नहीं थे। तो जब कोई चीज नहीं छुड़ाते थे तो घर में। अपने गृहस्थ आश्रम में रहो। यह काम कर लो। यह तो करते ही हो।

मरने के पहले अपना काम कर लो

यह तो तुम इसके साथ में रहते ही हो लेकिन यह जो जरूरी काम है यह तुम चारों आदमी कन्धे पर लाद कर लिये जा रहे हो। यह तुम्हारा भी होने वाला है तो तुम अपना काम तो इसके पहले ही कर लो कि तुम कन्धे पर न लदो इसके पहले तुम्हारा काम बन जाय।

यह ज्ञान देते थे कि भाई ऐसे कैसे निराश होकर चला गया। इसने कुछ काम किया नहीं अपने लिए। और तुम भी जाने वाले हो थोड़े ही दिनों में। तो तुम तो कम से कम जितने समय में काम कर लो यह महात्मा ज्ञान देते हैं। बताते रहते थे। इसलिए इन से बचो, संकट से बचो। जन्म से बचो, मरण से बचो। चौरासी से बचो, नर्कों से बचो। जल्दी से जल्दी तो तुमने जो लाद लिया है भार। उसको जल्दी उतारो। निर्मल हो जाओ, पवित्र हो जाओ। और तुम उस ज्ञान रूपी अग्नि में इन सबको जला दो। तो दोनों से छुटकारा हो जाय, पाप पुण्य से। जन्मत मरत इस सब पीड़ाओं से आप उपराम हो जाँय। छूट जाँय, हमेशा के लिए। महात्मा यह बात बताते हैं।

आप तो महात्मा की बात सुनते नहीं हैं

आप तो सुनते नहीं हैं उनकी बात को। आप ने तो उनको दुश्मन समझा। वे तो बड़े भारी दुश्मन हैं समाज के। देश के, मनुष्यों के, और इसका यह परिणाम हो गया कि उनको आप ने दुश्मन समझा। हुआ क्या। यह आप देख रहे हो।

मित्र न जानो बैरी पूरा।
गुरु भक्ति से डारे दूरा॥

एक एक शब्द अनमोल। कहते हैं ऐ नर नारी बच्चे बच्चियों मन को मित्र मत समझो यह सबका काल दुश्मन शत्रु है। उस भक्ति से तुमको दूर कर देगा। जो भजन है उससे दूर कर देगा। और उधर ले जाकर तुम्हें चौड़े मैदान में पटकेगा। वहां कोई सुनने वाला है नहीं। इस लिए तुम भजन के साथ, महापुरुष अन्तर में रास्ता बता कर भजन के साथ जोड़ते रहते हैं। कहते हैं कि तुमको इस रास्ते से दूर कर देगा। न तुम समझ सकोगे कि ज्ञान क्या है? आत्मा क्या है? ईश्वर क्या है। कल्याण क्या है? मुक्ति क्या है? स्वर्ग क्या है? बैकुण्ठ क्या है। आनन्द क्या है शक्ति क्या है। किसी का भी ज्ञान नहीं होगा दूर ले जाकर के तुमको गिरा देगा। जब दूर गिर जाओगे; चिल्लाते रहोगे कोई सुनने वाला नहीं। ऐसा शत्रु। दुश्मन यह मन है। इसलिए इसके कहने में कभी मत चलो इसको धीरे धीरे समझा कर

Scanned with CamScanner

इसको ले आओ। और ले आकर बैठाल दो। तुमको भी मुसीबत और इसको भी मुसीबत। तुम भी चौरासी जाओगे, पिटोगे। हम भी जाएंगे। तुम भी रोओगे हम भी रोएंगे। दोनों के दोनों रोएंगे वहां कोई सुनने वाला है नहीं।

आज समझने का वक्त है

इसलिए आज मनुष्य शरीर है कम से कम बैठकर के मान लो बात को। और चलो हम तुम दोनों उस आनन्द को प्राप्त करें। जो महापुरुष बता दें उस आनन्द को प्राप्त करें। भजन करें। वह आनन्द ले लें और ज्ञान शक्ति ले लें। और अपने कर्मों को दग्ध कर दें। जला डालें। छुटकारा तो हो जाय जनम मरन से। इतना काम तो करो।

मन तो दुश्मन है। यह दूर कर देगा

लेकिन यह तो शत्रु है। दुश्मन है। दूर कर देगा महापुरुषों से उनके रास्ते से दूर कर देगा, भजन से दूर कर देगा। धार्मिक पुस्तकों से दूर कर देगा। धार्मिक विचार से दूर कर देगा। सत्यता से दूर कर देगा फिर तो भोगों में फस जाओगे। वहां किसी को कोई ज्ञान नहीं रहता। फिर तो भोग भोगो। जो करोगे वह आपको सब भोगना होगा।

दारा सुत सम्पत परिवारा।
ढारे काम क्रोध की धारा॥

बड़े ध्यान से सुनो। सुत, पति, पत्नी, भाई बन्धु, कुटुम्ब परिवार। मकान जमीन, जानवर जो कुछ भी, धन दौलत हीरे चांदी ये वो। कहते हैं कि यदि तुम चले गए तो मोह। तो आप तो जानते नहीं कि—

'मोह सकल व्याधिन कर मूला?

पांच पुरजे हैं। काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार। इनमें सबसे मजबूत पुरजा वह मोह है। मोह का पुरजा यदि नहीं निकला तो आप और पुरजों को तो चाहे कुछ भी करो। लेकिन मोह बहुत बड़ा पुरजा। इसे अगर निकाल कर अलग कर दो तो चारों पुरजे कमजोर। और वे धीरे से निकल जाएंगे। लेकिन मोह, यह सकल व्याधियों का मूल है।

काम क्रोध की धारा बहती है

तो काम, क्रोध, लोभ, मोह, की धारा। फिर ऐसा काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, जैसे दरिया उमड़ पड़ा, बाढ़ जैसा। ऐसा जब यह वेग चलते हैं तब सब अन्धे हो जाते हैं उनको कुछ भी ज्ञान नहीं रहता है। किसी भी मानवता का ज्ञान नहीं रहता। किसी सत्यता का। इतना बड़ा प्रकोप अन्धकार का। जैसे काले बादल छा जाते हैं इसी तरह से छा जाते हैं। बस, फिर काम, क्रोध लोभ, मोह, अहंकार की जो धारा चलती है फिर वहां खड़े होकर रोता है।

कोई वहां सुनने वाला नहीं है

आज वही तो देख रहे हैं आप। अरबोपती खरबोपती, जब मुझसे मिलते हैं तो कभी कभी पूछने का अवसर मिल जाता है। मैंने कहा कि आपके पास तो दुनियां के सभी साधन होंगे!

धनी को और परेशानी है

अरे, कहने लगे महराज, क्या साधन कुछ नहीं। सब साधन होते हुए, बड़ी तकलीफ है, बहुत कष्ट है। ऐसी कोई दया कर दीजिए कि कष्टों से निवारण हो जाय।

फिर तुमने तो जितने भी साधन सामान कष्टों के इकट्ठा किए। यह समझ करके कि इससे हमको सुख मिल जाएगा। और इसमें सब साधन होते हुए तुम्हें कष्ट किस बात का। ऐसा चिल्लाते हैं।

आदमी अपने ही माया में फंस गया

लेकिन इतना जाल में फंस गए कि बिना

Scanned with CamScanner

महात्माओं के निकल नहीं सकता। कोई आदमी कहे कि मैं निकलकर आपने आप बाहर आ जाऊँ तो उसके बस की बात नहीं है। वह न त्यागी बन सकता है न महात्मा बन सकता है। न घर छोड़ सकता है न काम छोड़ सकता है। यह तो महात्माओं की कृपा होती है तभी कुछ हो सकता है, वैसे कुछ नहीं हो सकता।

मन चक्कर में डाल देगा

वो कहते हैं कि तुम कहीं अगर मन के चक्कर में आ गए, तो ले जाएगा तुमको। डालेगा ले जाकर इतनी दूर फेंकेगा कि वहां से इधर आने ही नहीं देगा। इसलिए ये जो कहें उसको करो।

इन्द्री भोग बास भरमाये।

और कहते हैं इन इन्द्रियों के वासनाओं के भोगों में, इतना आपको लीन कर देगा कि आपको कुछ पता नहीं रहेगा। ऐसी ऐसी वासना के आप भोगी, आदी बन जाएंगे कि आप उसको छोड़ ही नहीं सकते हैं। है जरा सी बात लेकिन आप से छूट नहीं सकती है।

तब इसको ज्ञान होता है

इसलिए ये इसका अनुभव प्रेमी जन नर-नारी गांव-गांव में कर रहे हैं। विषयों से फंसा हुआ था। और उधर कुछ भी नहीं था। तब ज्ञान होता है कि महापुरुषों के प्रभु की क्या कृपा होती है। भगवान उन महापुरुषों पर क्या दया करते हैं? और महापुरुष आप पर क्या दया करते हैं। यह एक दया का ऊपर से नीचे तक एक सिलसिला बना हुआ है। मानवों को दया देने का। तरीके से सबको शक्ति मिल जाया करती है बिना तरीके के कोई चीज मिलती नहीं। इसलिए इन्द्रियों के भोग वास में जो भरम गए और उसमें लीन हो गए। उसके आदि बन गए वह कितने दुखी और कितने थक गए। कमजोर हो गए। वह ऐसे नहीं छूट सकते हैं। महापुरुषों की कृपा चाहिए।

बाबा जी के पास मेस्मरीजम है

इसलिए लोग यह कहा करते हैं कि बाबा जी के यहां जाने से न मालूम क्या उनके पास मेस्मरिजम है। क्या चीज है कि जो जाता है लौटकर नहीं आता है। है कुछ नहीं। असल में बात है कि सत्यता है। और सच्चाई की सबको जरूरत है। चाहे उसके ऊपर कितनी सी भी आपने गन्दगी कूड़ा, कचड़ा डाल रखा। लेकिन जब महात्माओं के पास लोग जाते हैं तो उसको हटा देते हैं। जब गन्दगी हट जाती है तो शुद्धता निकल आती है। और शुद्धता को सभी चाहते हैं।

आनन्द को तो सभी चाहते हैं

उस शुद्धता में आनन्द है। आनन्द को कौन नहीं चाहता। प्रेम को कौन नहीं चाहता। सब चाहते हैं। तो असली बात यह है कि जब वह आनन्द मिलता है शुद्धता मिलती है, पवित्रता मिलती है, प्रेम मिलता है तो कौन नहीं चाहता है। प्रेम के दीवाने और प्रेम के भूखे सभी हैं। जीव जन्तु आदि प्रेम सब चाहते हैं। प्रेम से पुचकारिए तो चाहे कितना भी बिगड़ा हुआ जानवर चला आयेगा। लेकिन लाठी लेकर के खड़े हो जाइए तो कितना भी सीधा जानवर होगा चला जाएगा। आप किसी को गाली दोगे तो चलता जायेगा लेकिन प्रेम से बुलाओगे तो आपके पास आ आएगा तो जीव-जन्तु,

हित अनहित पशु पच्छिहु जाना।

अरे मनुष्य तो गुणों की खान है। पशु और पक्षी हित, अनहित को पहचानते हैं। वह भी समझते हैं कि यह मुझसे प्रेम करता है, यह मुझसे दुश्मनी करता है। वह भी जानते हैं यह मुझसे क्रोध से बोल रहा है या मुझसे जो है ये प्रेम से बोल रहा है। उनको भी इस बात का ज्ञान हो जाता है और

आदमी तो गुणों की खान है। इसलिए बात कुछ नहीं है। बात जो सत्य है वह अपनी जगह पर है।

बाबा जी भी आप की तरह से है।

बाबा जी आपकी तरह से हैं। कोई बाबा जी महात्मा नहीं हैं, कोई भगवान नहीं। लेकिन जो काम है महात्माओं ने जो किया। महात्मा तो आपने बताया। महात्माओं ने तो कभी अपने आपको महात्मा कहा ही नहीं। चाहे वह कबीर महात्मा हुए, चाहे वह रैदास महात्मा हुए। तुलसीदास जी महात्मा हुए या और कोई। कृष्ण ने भी अपने आप को नहीं कहा कि मैं अवतार हूँ। उनके काम से आपने उनको अवतार कहा, उनकी शक्ति से आप ने अवतार कहा। उनके ज्ञान से आप ने अवतार कहा। उन्होंने तो कभी नहीं कहा कि मैं अवतार हूं। अवतार अपने को नहीं कहा करते कि मैं अवतार हूँ उनका काम और उनका ज्ञान और उनकी पहुँच उनको शक्ति जब आप को प्रदान होती है तो आप स्वयं कहते हैं। वह कभी नहीं कहते हैं। किसी महात्मा ने अपने को कभी महात्मा नहीं कहा। वह तो आप ने कहा कि महात्मा हैं। कबीर महात्मा थे, रैदास महात्मा थे। तुलसीदास महात्मा थे, यह महात्मा थे। वह महात्मा थे वह तो आप कहते हो। उन्होंने तो कभी नहीं कहा। उन्होंने तो कहा भाई जैसे आप आदमी हो वैसे मैं भी आदमी हूँ। आप में और मुझमें कोई फर्क नहीं। जो आपको अधिकार है वह मुझे भी अधिकार है। मैंने तो काम किया आप ने काम नहीं किया इसलिए करो। वह बातें आप को सिखाई थी। तो आपने काम किया नहीं।

महात्मा की बात को मान लो

इसलिए आप बस मन के साथ मत रहो। थोड़ा सा महापुरुषों की बात को मानो। जो वह कहें उसको करो और वही कहेंगे जो आप के लिए, समाज के लिए, आप के लिए, बच्चों के लिए और आप की जीवात्मा के लिए हितकारी होगा वही बात करते हैं ऐसी कोई बात नहीं करते है जिसमें कोई समाज का नुकसान हो, देश या परिवार का। महात्माओं में यह प्रसन्नता होती है। यह वह अच्छी तरह से जानते हैं कि कोई बात ऐसी करेंगे तो आज नहीं कल खराब हो जायगा। तो ऐसी कोई बात करते ही नहीं। न अब खराब होना है आगे वह आप न समझो तो बात अलग है लेकिन वह ऐसा रास्ता तैयार करके हैं जो बहुत मुद्दतों तक चलता रहे। इसको कोई बिगाड़ नहीं सकता महात्माओं का रास्ता बनाया हुआ फिर उसका लोग अनुसरण करते हैं। फिर उस पर चलते हैं क्योंकि उसी रास्ते की फिर जरूरत पड़ती है लोगों को। इसलिए कोई ऐसा काम नहीं करते।

भक्ति विवेक नाश करवावे।

मन भक्ति और विवेक को भी नाश कर देता

और जो भक्ति का विवेक, जो मानवता का ज्ञान, जो प्रेम और सत्यता का, सेवा का जो दया का ज्ञान उसको भी नाश करा देगा और जो आत्म कल्याण का विवेक, भक्ति का जो ज्ञान उसको भी खतम कर देगा। ऐसा मन दुश्मन। भोगों में, इन्द्रियों की वासनाओं में, इतना लीन हो जायगा इतना अपने आप को डुबा देगा कि आपको होश भी नहीं रहेगा। जीवन का एक क्षण भी आपका काम में नहीं आएगा।

यही मनुष्य होशियार है

इसलिए जो मनुष्य चतुर और होशियार

है जो अपने मनुष्य अनमोल मिले हुए जीवन को, अपनी जीवात्माओं के कल्याण के लिए कुछ क्षण बचाकर और इसके जगाने में लगा दे। वह होशियार और चतुर है। वही समय आपका काम आएगा जो इसके जगाने में जितने क्षण आपको लगेंगे। वह तो इसके काम की चीज है। और बाकी जितने भी हैं इसके सब बेकार हैं। कोई काम आने वाली चीज नहीं है।

भक्ति करने पर हर कार्य उसी में जोड़ दिया जाता है

इसलिए मनुष्यों ने कहा कि जब तुम भक्ति करने लगोगे तो जो भी शारीरिक क्रिया करोगे, समाज की सेवा करोगे, बच्चों की सेवा करोगे उस सबको भक्ति के रूप में बदल दिया जायगा। वह भी काम फिर अन्त में भक्ति के रूप में यानी प्रवाम हो जाता है वही काम। लेकिन अगर उसको आपने छोड़ दिया तो फिर खतम। वही क्षण हमारे लड़ते लड़ते जो बाकी के हैं भक्ति के रूप में लाकर जोड़ दिए जाते हैं। क्योंकि आपने वह काम इसीलिए किया। शरीर की सेवा, दूसरों की सेवा आपने इसीलिए की है कि जिस तरह से भी हो जाय हमारी जीवात्मा जाग जाय। तो यह फल आपको स्वाभाविक महात्माओं के यहां प्राप्त होगा। उसमें कुछ करने धरने की जरूरत नहीं पड़ती। वह तो ऐसी चीज है उसके पास स्वाभाविक जोड़ दी जाती है कि वह चीज आपको जो मिटा हुआ जो आपका खराब समय हो गया वह भी जुड़ जाय।

सतगुरु कौन है ?

सतगुरु प्रीतम मिले न जब तक।

अब वह महापुरुष कहते हैं कि जब से कि सतगुरु नहीं मिलेंगे तब तक वह प्रीतम, बादशाह स्वामी, अन्तर्यामी परमात्मा, ब्रह्म जिसको ईश्वर सर्व शक्तिमान, सुप्रीम पावर कुछ भी आप कह लें जो जगत को चलाने वाला, जमीन और आसमान को सूरज, चांद और सितारों को आत्माओं को ले जाने वाला, ले आने वाला। कहते हैं जब तक सतगुरु नहीं मिलेंगे उसको पाने वाले तब तक आप उस प्रीतम को नहीं पा सकते हो।

ईश्वर कब मिलेगा ?

अच्छा वह है कि आप उन महापुरुषों से मिलें जिसने उस प्रीतम को पा लिया तो जब तक सतगुरु मिलें न तब तक प्रीतम कभी नहीं मिल सकता। मालिक। मिले हुए जब सतगुरु मिल जायेंगे। उस सत्य को पाने वाले, तब तुमको प्रीतम की खबर मिलेगी। तब तुमको रास्ता मिलेगा। उसका पता और निशान मिलेगा। और फिर वह किस तरह से जीवात्मा को उस सत्य के साथ जोड़ेंगे यह उनको मालूम है। जब सतगुरु नहीं मिलेंगे तब प्रीतम की खैर पता निशान, आपको बिलकुल नहीं मिल सकता है कि किस रूप में है ? कहां पर है ? कैसे मिलेगा ? कौन सा नाम है ? कौन सा रूप है ? किस आवाज में है ? यह आपको कुछ पता नहीं।

सतगुरु के बिना मिले काम नहीं हो सकता

इसलिए सतगुरु का मिलना यह सर्वप्रथम है। कबीर हों, नानक हों, रैदास हों उनकी किताबों में, उनके धर्म ग्रन्थों में, सद्‌पुस्तकों में, बल भर, कूट-कूट करके लिख दिया गया कि मिलो। महात्माओं से मिलो। जब तक उनसे नहीं मिलोगे तब तक यह नहीं मिलेगा। इसलिए जरूरी है। सतगुरु जब तक मिलेंगे नहीं तब तक प्रीतम नहीं मिलता।

कभी न छूटे मन से कौतुक।

मन शैतान है

और जब तक सतगुरु नहीं मिलेंगे, उस

Scanned with CamScanner

प्रीतम से मिलाने वाले, तब तक इस मन के खोटों से, मन के फरेब, मन के जाल से मन के फरेब, मन की शैतानी से, शैतान से कभी आप नहीं छूट सकते हो। यह तो बहुत बड़ा शैतान है। इसके लिए ये मुहम्मद साहब ने कहा अपनी कुरान में कि मैं मन शैतान के साथ में ऐसा फंस गया कि यह इतना जबरदस्त शैतान है कि यह मुझको भी तबाह किए हुए है, बर्बाद किए हुए हैं। कितने दिनों तक अन्न नहीं खाया। जंगल में भूखे रहे, पानी पी, पी करके रहे। लेकिन मन शैतान उनको भी तबाह करता रहा।

सतगुरु के बिना यह वश में नहीं होता है

तो यह ऐसा मन शैतान है ऐसा दुश्मन है यह बिना सतगुरु के मिले हुए यह कभी भी वश में नहीं होता है। यह धीरे-धीरे मोया लगाया जाता है। आप ने देखा होगा कि बहुत सी चीजें हलवाई बनाते हैं तो बहुत सी चीजों पर मोया लगाते हैं। मोया लगाने का मतलब घी लगा देते हैं। थोड़ा घी लगा दिया उसके ऊपर उन्होंने तो बड़ी खूब सूरती से और खिल जाती है चीज।

एक मिनट में लड़ा देता है

तो जब तक कि इस पर मोया न लगे। महापुरुषों का तब तक यह ऐसा दुश्मन, ऐसा शैतान। बड़े बड़ों को इसने तबाह कर दिया। यह एक मिनट के अन्दर युद्ध करा दे। एक मिनट के अन्दर घर में लड़वा दे। पति पत्नी से लड़ा दे, पिता पुत्र से लड़ा दे। भाई बन्धु से लड़ा दे, राजा और रैयत से लड़ा दे। एक मिनट के अन्दर।

महापुरुष मन की खैर खबर रखते हैं

अरे दुश्मन तो, चोर तो तुम्हारे पास बैठा हुआ है। इधर उधर क्या है। यह मामूली बात नहीं है। यह तो महापुरुष इसकी खैर खबर रखते हैं। और मोया लगाते हैं। और लगाते, लगाते, लगाते लगाते; लगाते, लगाते इसको धीरे धीरे करके, सुना सुना कर आवाज खिलाते हैं। और वह तब खुश होता है। वरना वह किसी समय पर हो काट ले। इसे क्या देर लगती है।

मन जहरीला सांप बन कर बैठा है

तो यह जहरीला मन घट घट में यह जहरीला सांप बैठा हुआ है। और तक्षक की तरह से काट ले। किसी को छोड़ता है? किसी को नहीं।

एक ही मन ने पूरे देश को तबाह किया था

आप ने देखा होगा एक साल के पहले क्या मुसीबत इस देश के ऊपर में अकारण खड़ी कर दी गई। तो वह एक ही मन ने तो खड़ी की। लाखों मन तो नहीं थे। लेकिन लाखों मन को तबाह। अब लाखों मन चिल्ला रहे। लाखों मन इधर से उधर भाग रहे। क्या हो रहा उस समय पर।

यह मन ही सब करता है

तो ऐसा यह दुश्मन है मन घट घट में बैठा हुआ है एक मिनट में कुछ, दूसरे मिनट में कुछ। दूसरे दिन कुछ। तो कुछ न कुछ कर देता है। आपने पिछले इतिहासों को सुना है कितनी खून की नदियां इसने बहा दी। ऐसी ऐसी नदियां बहा दीं। तो यह है। कहते हैं कैसे बस में आयेगा? यह शैतान, चोर, दुश्मन। कहते हैं जब महात्मा मिल जायेंगे और मोया लगायेंगे इस पर धीरे धीरे।

तब यह योगी और ज्ञानी बन जाता है

वे ऐसा प्रेम का मोया लगाते हैं कि धीरे-धीरे, धीरे-धीरे, धीरे-धीरे इसका बड़ा जहरीला, जहर इसका धीरे-धीरे इसको उतार देते हैं।

Scanned with CamScanner

उतारते उतारते, उतारते उतारते। फिर उतार देते हैं। तब यह मन साधु देवता है और योगी बन जाता है। ज्ञानी बन जाता है सिद्ध बन जाता है। तपस्वी बन जाता है। फिर यह क्या क्या बन जाता है और क्या क्या कहा गया है इसके लिए यह तो किताबें आपको बताती हैं। भविष्य में भी बतायेंगी कोई बात नहीं।

छल बल मन के कहां लग बरनूं।
ऋषि मुनि कोई जाने न मरमूं॥

ऋषि मुनि को मार गिराया

कहते हैं बड़े बड़े ऋषि मुनि जंगलों में घर बार छोड़कर के वहां तपस्या करते रहे। उनको तो उसने चकनाचूर कर ही दिया। और तुम्हारे मन का क्या है? तुमको गिराने में, तुमको फंसाने में कितनी देर लगती है। कुछ नहीं। ऋषियों मुनियों को जिन्होंने यह कहा था मैंने घर छोड़ दिया मैंने राज छोड़ दिया। मैंने यह छोड़ दिया। मैं त्याग करता हूँ, मैं तपस्या करता हूँ। मैंने शरीर को गला दिया। उनके मन ने तो धोखा दे ही दिया। और आपके मन की बात क्या पूछी जाय?

आप उसके लिए क्या हैं

आपका मन तो चौबीसों घण्टे ऐसे ऊंचे खन्दक पर खड़ा हुआ है फटाफट गिरता है क्या देर लगती है। कुछ नहीं। ऋषियों मुनियों की बात तो यह है। आपके मन की बात क्या?

तीन चीजें सार हैं

अब कलियुग में महात्माओं ने सुगम और सुलभ आसान एक ही रास्ता रखा दूसरा नहीं।

सतसंग जल जो कोई पावे।
मैलाई सब कट कट जावे।"

सतसंग रूपी महापुरुषों का जल यह हमको मिलना चाहिए। धीरे-धीरे, धीरे-धीरे वह मैल काट देती हैं। और तीन चीजें इन्होंने सार रखी हैं। एक तो सतसंग। दूसरा भजन। और तीसरा दर्शन और सेवा। यह तीन चीजें मुख्य हैं और यही चीज अगर हम लोगों में आ जाय तो काम बन जाय। सेवा, दर्शन, सतसंग और भजन और इसी के लिए यह सब कुछ यह इतना किया जा रहा है इतने दिनों से कि धीरे-धीरे लोग, धीरे-धीरे लोग बस जरा आ जांय।

अब तो बहुत लोग तैयार हो गये

अब तो हिन्दुस्तान में भजन करने के लिए बहुत तैयार हो रहे और भजन करने से लोगों को यह पता चलने लगा कि भजन भी कोई चीज है? इसकी भी जरूरत और आवश्यकता है। और जो किताबें बताती हैं वह यही बताती हैं। और करोड़ों आदमी इस रास्ते पर लग गए। उनको देखते भी हैं। बहुत कुछ लोगों को उससे प्रेरणा भी मिल रही। और बहुत कुछ लोगों के विचार भी उनको देखकर के बदल गए।

मेहनत कभी असफल नहीं होती है

मेहनत धीरे-धीरे कभी न कभी जो सद्भाव सच्चाई से मानवता और आत्माओं के लिए होती है वह कभी न कभी काम आती है। महात्माओं का, प्रेमी भक्तों का कभी प्रयास मेहनत असफल नहीं होती। ऐसा कभी कोई मत समझो कि मैं मेहनत कर रहा हूँ तो यह असफल हो जायगी। मेहनत कभी निःस्वार्थ मेहनत कभी असफल नहीं होती है। स्वार्थ की मेहनत तो कभी असफल हो जायगी लेकिन निःस्वार्थ मेहनत असफल भक्ति और भक्तों प्रेमियों की, महापुरुषों की न कभी हुई न होगी।

धीरे-धीरे सब बदल कर ठीक हो जायेगा

हम लोग सबके सब इसी काम में लगने

जा रहे निःस्वार्थ हो करके। यह सब लोग मानव रूप में सुखी रहें और आत्म रूप में भी लोगों को सुख शान्ति मिले। इधर भी हो उधर भी हो। इस तरह की चेष्टा करके, कोशिश करके मेहनत करके अपने आपको धीरे-धीरे बदल जायंगे। और मनुष्य जब गन्दगी को जमा कर लेता है तो कोई न कोई काम सफाई का हो ही जाता है। तो साफ भी कर लेना इसमें क्या बात है। जब गन्दगी जमा हो गई। मालूम हो गया गन्दगी जमा हो गई। और यह पता चल जाय कि गन्दगी चली जायगी तो साबुन ले लें। लगा दें गन्दगी साफ हो जायगी।

ता ते सतगुरू खोजो निज के।
बिन सतगुरु कोई चले न बच के।

इसलिए महापुरुषों ने हमेशा कहा है कि तुम सतगुरू खोजो। सतगुरू की तलाश करो। कोशिश करो कि सतगुरू मिल जांय। और जब तक कोशिश नहीं करो सतगुरू नहीं मिलेंगे, तब तक यह काम होने वाला नहीं है। उन्हीं की खोज के लिए यह सब पुस्तकें आपको प्रेरणा दे रही हैं।

महात्मा उदाहरण देकर पुष्ट करते हैं

जब भी महात्मा कभी आते हैं, इन पुस्तकों के प्रमाणों को देकर आपको परिपक्व करते हैं। पुराना इतिहास महात्माओं का बता देते हैं। भक्तों की सेवा बताते हैं। उनके त्याग को और उनके कष्टों को भी बताते हैं जिससे आपको प्रोत्साहन मिलता है और हिम्मत हो जाती है। साहस हो जाता है कि पिछले लोगों ने भी बड़े कष्ट उठाए थे। यानी ईश्वर को पाने के लिए और अपनी आत्म शक्ति चेतना को जगाने के लिए और हम भी अगर थोड़े बहुत कष्टों को उठा ले तो यह कोई बड़ी मुश्किल वाली बात नहीं है। पिछले लोगों ने बड़े कष्ट उठाए। हमको तो मामूली कष्ट ही मिल रहा है। इसमें आप को हिम्मत हो जायगी, साहस हो जायेगा। विश्वास अपने पर महात्माओं, भगवान पर आ जायेगा। इसलिए उन्होंने कहा है कि उस सतगुरु को खोजो जो सत्त को पा चुका है।

सतगुरु सम प्रीतम नहि होई।
मन मलीन को धोवें वोही।

अरे सच्ची बात तो यह है कि सतगुरु ही हमारे लिए वह प्रेमी हैं जो सच्चा हमसे प्रेम करते हैं। क्योंकि हमारे मन मैले को वही धोना जानते हैं। दूसरा और कोई धोना नहीं जानता उनके पास में मन को। अन्तःकरण को, चित्त को, बुद्धि को, जीवात्मा को धोने का साबुन उनके पास है। हमको चाहिए कि हम उनके पास जाँय, और हमको वह साबुन मिल जाय। औषधि मिल जाय, जड़ी मिल जाय और हमारे मन मलीन को धो दें। ऐसी दया और भीख कृपा की मांगना चाहिए। और यही भीख भक्तों ने मांगी है।

भक्तों को यह भीख मिलती है

समय समय पर भक्तों को यह भीख मिली। उन्होंने अपने मन को उस प्रेम को ले करके धो डाला। साफ कर लिया। और बड़े बड़े चोर डाकू बदमाश जिन्होंने ब्रह्म को प्राप्त कर लिया। त्रिकालदर्शी बन कर सतयुग, त्रेता, द्वापर कलयुग चारों युगों की बात यानी लिख कर चले गए. एक बात कोई काट नहीं सकता। पढ़ने लिखने की इस विद्या में कोई जरूरत है नहीं। पढ़ना लिखना तो अंधकार वस्तुओं के लिए है। जड़ वस्तुओं के लिए। पढ़ने लिखने की कोई जरूरत नहीं। इसको आप हमेशा ध्यान में रख लें।

Scanned with CamScanner

अपनी भाषा से सही और ज्यादा उन्नति होती है

ऐसी बात नहीं है कि अंग्रेजी थी। रामायण में लिखा हुआ है कि पहिले भी विज्ञान था जब अंग्रेजी नहीं थी। उस समय किताबों में लिखा हुआ है कि ऐसे ऐसे धनुष बाण थे कि एक मार दीजिए सारा विश्व खतम हो जाय। उन्हीं किताबों में लिखा हुआ है जो अपनी संस्कृति की धार्मिक पुस्तकें हैं। उसमें लिखा हुआ है कि लोग पांच पांच मिनट के अन्दर यानी विदेशों से भारतवर्ष में आ जाते थे और चले जाते थे। ये किताबों में। तो आप यह कहें कि अंग्रेजी पढ़के मैंने कोई नया विज्ञान प्राप्त कर लिया। यह आपकी भारतवासियों की भूल है। सबसे बड़ी भूल है।

हम तो चाहते हैं कि भारतीय वेष भूषा हो

हम तो यह चाहते हैं कि भारतीय वेष भूषा हो। धोती हो, कमीज हो, कुरता हो। मुसलमानों के लिए शेरवानी हो, चूड़ीदार बाढ़चा पैजामा हो। बहुत बढ़िया पोशाक जंचती है। फकीरों ने जो पोशाक को निकाला खुदा का। शेरवानी बहुत बढ़िया। और वह चूड़ीदार पैजामा आप देखिए। फिर साधारण रहने के लिए उन्होंने लखनऊ आ कितना बढ़िया कुर्ता उस समय पर निकाला था। नकाबीदार। अपने हिन्दुओं के लिए उन्होंने आपके लिए कितनी बढ़िया धोती कुरता कि जिसको देख करके पानी शोभा ज्ञान की और सदभाव की प्रेम की मूर्ति टपकती थी।

वेष भूषा ही सब चौपट किया

क्या, मतलब यह है, वेश-भूषा पहन लिया। इसी वेष-भूषा ने तो मतलब यह है कि अपनी संस्कृति ही अपने आनन्द, प्रेम अपनी सभ्यता; सदाचार, सेवा इस सबको खतम कर दिया। तो अब तो वेश भूषा को अपनाना ही पड़ेगा। आज न अपनाओ तो कल अपनाना ही पड़ेगा। वह तो अपनाना ही है। अरे हंस के अपनाओ रो के अपना लो। समझ गए। वरना कोई बीमारी और लग जायेगी अपने आप पतलून छूट जायेगा। कोई बीमारी लग जायेगी पतलून अपने आप छूट जायगी, धोती पहनना पड़ेगा। पहले लुंगी पहनना सीख लेना बाद में धोती पहन लेना। कोई हर्जा नहीं है लुंगी उसी की एक छोटी सी घर में रहने वाली बहन है। घर में, जब बाहर नहीं जाते थे तो घर में लुंगी बांध ली। उसी से ऐसा फेटा मार लिया और जब बाहर जाने लगे तो धोती पहनी और काछ लगा ली।

धीरे धीरे अपनी वेष भूषा में आवें

तो असल में मतलब यह है कि पहले लुंगी पहनना बाद में लुंगी जब आ जायगी पहनना, बाद में धोती पहनना आ जायगा। हर्जा क्या है। कोई बात नहीं है। जो आसानी से बदल लो अपने आप को बहुत अच्छी बात है। तुमको बहुत अच्छा कहेंगे। मजबूरी में तो सभी बदल जाते हैं। बेबस में बदलोगे तो यह कोई महत्व नहीं है।

सब काम भारतीय ढंग से होना चाहिये

इसलिए भारतीय हर काम होना चाहिए। भारत देश आजाद हो गया। अपने देश के लोग हैं। अपना इन्तजाम करते हैं। अपने देश के लोग हैं। अपने यहां के लोग हैं। और वेश भूषा से बहुत कुछ गुण आते हैं। अपने आप आ जाते हैं। बच्चों को भी आ जाते हैं। शिक्षा देने की माता पिता को कोई जरूरत नहीं है। बच्चे अपने आप वेश भूषा से आपके सीख लेते हैं। बहुत सी कहानियां वेश भूषा से सीख लेते हैं।

आप करें तो बच्चे भी नकल करके सीख लेंगे

तो यह चीजें अपने आप मां-बाप बच्चों

को रात को लेटा करते थे उसी में सिखा देते थे। एक उनका अजीब इतिहास बन जाता था। अजीब इतिहास सीख लेते थे। स्कूल की विद्या स्कूल में उन्होंने पढ़ ली आचार्यों से तो काम बन गया। कुछ घर में कुछ बाहर कुछ महात्माओं से सीख लिया। हो गया। आप सम्पन्न और आपको क्या चाहिए। अभी सम्पन्नता तो कुछ है नहीं सब काम में दखल देते हैं, हर बात में। योग में भी दखल देंगे। इसमें भी दखल देंगे, उसमें भी दखल देंगे। हर बात में दखल देंगे, जानेंगे यह कुछ नहीं। लेकिन दखल हर बात में देंगे। हम वह भी जानते हैं यह भी जानते हैं। जानना-जूनना कुछ नहीं। जानने को, मतलब यह है कि दखल देना सब कुछ सीख लिया।

मन बड़ा जिद्दी है

वह भी जिद और किसकी जिद है? मन की। यह मन क्या है दुश्मन है। जो आपको कुछ भी नहीं जानने देता है। यह दुश्मनी करता है आपके साथ।

मेरा भाग्य उदय हुआ भारी।

अब यह प्रेमी कहते हैं कि मेरा भाग्य उदय हो गया। मुझे तो मेरे भाग्य से तो मुझको महापुरुष सतगुरु मिल गए। मुझे यह उन्होंने औषधि दी कि

सतसंग-जल से कोई पावे।
मैलाई सब कट कट जावे।

यह सतसंग जल मिलने लगा और मैलाई कटने लगी। इतने बड़े भाग्य से जीवन बी। न मालूम कैसे उदय हो गए कैसी कृपा दया हो गई।

उन्नति का मौका हर व्यक्ति के जीवन में आता है

तो सभी का यह भाग्य उदय होता है मानव के जीवन में। और भाग्य को उदय करने के लिए अवसर तो सभी को मिलता है। ऐसी बात नहीं है। लेकिन आप उस अवसर को आने नहीं देते हो। किले का दरवाजा है। जब अंधे बनकर दरवाजे के पास पहुंच गए तो खुजली आ गई। दो कदम बस और बढ़ा लिया दरवाजा छूट गया। ठीक इसी तरह से है। जब महापुरुषों के मिलने का समय आता है तो कोई काम बन जाता है। कोई झगड़ा लग गया। कोई और कुछ हो गया। बस इधर से आना जाना बन्द हो गया तो समय निकल गया। फिर समय मिलता नहीं। बस यह होता है।

सन्त सुलभ सब दिन सब देशा

असल में जीवन में अवसर तो सबको मिलता है। समय सबको दिया जाता है ऐसी बात नहीं। और महात्मा चारो दिशाओं में जाते हैं। उनको सबको, प्रयागराज के समान हैं। वह तो चलते फिरते तीरथ हैं। जिनको स्नान करना है मन, बुद्धि, चित्त, अन्तःकरण। अपने तन मन के क्लेशों को धोना है वहां जाकर के धो डालो। उधर तीरथराज है। स्नान जा करके करो वहां जाकर और सबको सुलभ है। सब देश में सुलभ है। सब जगह सुलभ है। लेकिन आप न इस सुलभता को प्राप्त करो तो क्या कहा जाय। तुमको क्या दोष है।

महापुरुषों से सीखना असल चीज है

तो असल चीज यह है कि महापुरुषों की सब कुछ बात चीत। हम लोग विद्वान बनें गुणों को ले आंए। और सोने में सुहागा अपनी आध्यात्मिक विद्या को सीख लें। बहुत बड़ी देन आप को मिल जायगी। मामूली चीज नहीं होगी। इधर भी तुमने जान लिया। उधर भी सब जान लिया। इधर गुण सम्पन्न हो

जाओ मानवता के उधर गुण सम्पन्न आध्यात्मिकता के। दोनों तरफ चल पड़ो। अच्छी बात तो यह होगी।

जन्माष्टमी का सच्चा अर्थ

तो जन्माष्टमी का अवसर जो आप को बताया जा रहा जल, पृथ्वी, अग्नि, वायु, आकाश यह पांच तत्व हैं। रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण यह तीन तत्व हैं। तो तीन और पांच, आठ तत्वों में यह जीवात्मा बंधी हुई है। ऐसे गांठ उसके साथ में बांध दी गई। जब तक यह आठ तत्वों से न निकले तब तक जन्माष्टमी नहीं होगी।

जीवात्मा की बैठक

पहले समझ लो दोनों आंखों के बीचोबीच अन्दर में जीवात्मा पांचों आठो तत्वों में। जल, पृथ्वी, अग्नि, वायु, आकाश पांच यह। रजोगुण तमोगुण, सतोगुण तीन यह। आठ तत्वों के साथ इसका गठबन्धन है। जब तक इनसे अलग न निकालो तब तक इनका जन्म न हो।

दिव्य नेत्र कब खुलेगा

तो दिव्य नेत्र, ज्ञानचक्षु, शिवनेत्र तिसरा नेत्र नहीं खुलेगा तब तक जन्माष्टमी हो नहीं सकती। जन्माष्टमी का उद्देश्य और मतलब यह है कि जीवात्मा जगे और दिव्य नेत्र दिव्यनेत्र, ज्ञानचक्षु खुले। और आठ तत्वों से इसकी गांठ खुल जाय। रामायण में गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज कहते हैं कि—

छोड़त ग्रन्थि पाव जो कोई।
तब यह जीव कृतारथ होई॥

इस रास्ते में अनेक बाधायें पड़ती हैं।

इस आठ तत्वों की ग्रन्थि को जो कोई भी खोल ले वह कृतार्थ हो जाता है। और—

"छोरत ग्रन्थि जान खगराया,
बिघ्न अनेक करे तब माया"।

किसलिए विघ्न कि—

"जो गुरु कहें करो तुम सोई।"

तुमने उस कहने को किया नहीं तो अनेक प्रकार से उस माया ने विघ्न किया। और वह ग्रन्थि को जो आठ तत्वों की थी उसको उन्होंने खुलने नहीं लिया। जब खुलने नहीं दिया तो फिर कैसे काम चलेगा। तो—

छोड़त ग्रन्थि जान खगराया।
बिघ्न करे अनेक तब माया।
रिद्धि सिद्धि प्रेरें बहु भाई।
बुद्धिहि लोभ दिखावहिं आई।
छल बल कल जाहि समीपा।
अंचल बात बुझावहि दीपा।

आपको तो ज्ञान कुछ है नहीं। महात्माओं की चीज मान लो। उनका कहना मान लो। उनके रास्ते को मान लो। अपने मन को घुला लो। तो क्या होगा?

हर बुद्धि जो परम सयानी।

फिर क्या होगा कि बुद्धि जग जायेगी। परम सयानी हो जायेगी कि यह संसार क्या है। नश्वर है। यह संसार क्या है? मिटने वाला है। यह संसार क्या है? बिखरने वाला है।

यह क्या है? नंगे आये थे। यह क्या है? कोई साथी नहीं था। यह क्या है? कोई नाम नहीं था। यह क्या है? कोई जाति नहीं थी। मैं कुछ धन लेकर नहीं आया। न मैं कुछ सोना चांदी लेकर आया। यहां आकरके माया ऐसी क्षणिक नाशवान पदार्थों में फंसा लिया।

हो बुद्धि जो परम सयानी।
तिसको सुमिरत अमिट न जानी॥

उनको तरफ फिर नहीं देखती है। क्या समझती है, सब चीजें हमारा नुकसान करने वाली है।

गुरु को महत्ता हर पुस्तक में मिलेगी

भगवान ने आपको यह बताया, लेकिन

वह भी बात आपने ने। वहां भी वही लिखा है। वहां जो गुरू की व्याख्या उन्होंने की, वहां भी यही लिख दिया है।

बिन गुरु भव निधि तरें न कोई।
जो विरंच शंकर सम होई॥

वहां गुरू की रज के लिए इतना उन्होंने लिखा रामायण में वह भी आप नहीं समझ पाए। बुद्धि को जागृत किया नहीं? महात्माओं की बात मानी नहीं? मन को घुलाया आपने नहीं। तो बतलाइए यह आठ तत्वों की आपकी यह गांठ कैसे खुले और जीवात्मा कैसे जगे और फिर जन्माष्टमी कैसे मनाएं। फिर कैसे यह समर्थ बने? बड़ी मुश्किल की बात है तो सबने एक ही कही। राम ने भी वही बात। कृष्ण ने भी वही बात की थी और उन्होंने भी वही बात की।

कृष्ण के पैदा होने पर भी नहीं मनाई गई जन्माष्ठमी

असल में अगर उनकी जन्माष्टमी मनायी जाती है तो जब पैदा हुए थे तब नहीं मनायी गई। कंस को मार दिया तब नहीं मनायी गई। उसके बाद में उन्होंने और बहुत से काम किए तब भी नहीं मनायी गई। वह तो जन्माष्टमी के मनाने का समय कब आया? आपको तो मालुम नहीं है। यह तो आप जानते नहीं की क्या लीला की? व्यास ने क्या लिखा है, भागवत में। वह तो आपने समझा नहीं और उन्होंने गीता में क्या लिख दिया?

बाद में जन्माष्ठमी मनाई गई

यह बाद में जब कृष्ण भगवान् चले गए तब बड़ा शोर मचा। फिसर गए, फिसर गए, यह क्या हो गया? वह क्या। सारी दुनियां का सर्व नाश हो गया। यह हो गया, वह हो गया। जल्दी करो देर मत करो। नहीं और नुकसान हो जायेगा। यह हो जायेगा।

लोगों ने फिर यह काम करना शुरू कर दिया। बाद में फिर आप जन्माष्ठमी मनाओ या फिर और जो कुछ भी करो जो इच्छा में आ जाय।

योग करके ही लोग मुक्ति और मोक्ष को पाते हैं

उन्होंने उद्धव से कहा कि हे उधो अगर तुम मुक्ति चाहते हो, मोक्ष चाहते हो मेरे धाम को आना चाहते हो तो चले जाओ उत्तरा खण्ड में और योग करो। और योग के बल से-यानी अपनी जीवात्मा को उस आत्म शक्ति से उसको निकालो। तब मेरे धाम को सीधे अपनी जीवात्मा को ले जाओ। ले आओ। बिना उसके मेरे धाम को कोई नहीं जाता।

८ तत्वों की गांठ को खोलना होगा।

तो ५ तत्व और तीन तत्व कुल आठ तत्व के कँवल में वह जीवात्मा को गाँठ बंधी हुई है। और बिना महापुरुषों की मदद के कोई इसको खोल नहीं सकता। उन्हीं की कृपा से यह धीरे से खुल जाती है। और यह जीवात्मा बिलकुल से एक दम जब प्रकाश में खड़ी होती है तो उसका जनम होता है। उसको कहते आत्म साक्षात्कार।

तब आत्म साक्षात्कार होता है

जब वह आत्म साक्षात्कार होता है तो अपने रूप का बोध होता है। कहने लगे मैं किस रूप का हूँ? मैं कोई आदमी नहीं हूं न मैं जानवर हूँ न देव हूं। हाड़ मांस का हूं। मैं एक चेतन नूर हूं। प्रकाश का ढेर, लाइट का एक समूह, खजाना। वह उस समय पर उसको मालुम होता है बड़ा सुन्दर जिसकी उपमा किताबों में लिखी नहीं जा सकती है। उसको कहते हैं आत्म बोध। आत्म दर्शन। उस आत्म

Scanned with CamScanner

दर्शन में कहते हैं जन्माष्टमी होती है। मैं चाहता था कि और जगह के लोग भी लाभ उठावें।

यह जन्माष्ठमी का जो सतसंग रख दिया। मैं तो यह चाहता था कि जन्माष्ठमी के ये दूसरी जगह पर भी सतसंग हो जांय। और और लोगों को भी बहुत लाभ हो।

रक्षा बन्धन में कलकत्ते वालों ने मजबूर और विवश कर दिया तो कलकत्ते जाना पड़ा। और जन्माष्ठमी में आप ने विवश कर दिया। लेकिन औरों को भी अवसर हर त्योहारों का, मतलब और उसका लाभ, मिल जाना चाहिये और क्योंकि वे भी अपने भाई हैं। आप ने कई दफे इसका लाभ लिया। और लोगों को भी मिलना चाहिये।

तो उतना ही विवशता और मजबूरी जाहिर कीजिए जिसमें कि अपना और औरों का विशेष लाभ हो।

मैं समय से आ गया

तो आज यह आप को अवसर दिया। आप के यहां यह समय से आ गये। कल भी सतसंग होगा सुबह। फिर कार्यक्रम के बाद भी सतसंग होगा। पहले भी होगा कार्यक्रम के बाद भी हो जायेगा। कल फिर कुछ विशेष बात बता दी जायेगी जिसको आप यहां से लेकर जायेंगे।

काशी का तृतीय साकेत महायज्ञ

फिर आप से अभी से प्रार्थना और निवेदन है कि काशी का कार्यक्रम जो होने जा रहा है फागुन के महीने में सन ७९ में फरवरी में १५ से २५ ता० तक। उसको सदे नजर, ध्यान रखिये। यह कार्यक्रम विशेष लाभ देगा। यह होने जा रहा है लोक की दृष्टि से मानव की दृष्टि से और राष्ट्र की दृष्टि से, और आत्मा की दृष्टि से। इसमें सभी चीजें आ गई। कोई चीज बाकी नहीं। सब चीजें आ जाती हैं।

महात्मा के काम मानवता के होते हैं

महात्मा किसी जाति की भावना से कोई काम नहीं करते हैं। मानव की भावना से एक विशाल काम करते हैं। उसमें इतना बड़ा, अद्वितीय, जिसकी आप कल्पना नहीं करते थे। अहमदाबाद में। वह आप ने देखा अहमदाबाद में अपनी आंखों से। एक छोटा सा साथ में अयोध्या के किनारे, सरयू जी के तट पर देखा। और वह आपने अपनी आंखों से देखा जिसकी आपको कल्पना भी नहीं थी जिसको आपने देखा। और अब यह देखने आप जा रहे हैं।

दो करोड़ उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलों से हीं हो जायेंगे

मैं तो यह समझता हूं कि लखनऊ से पूरब जिलों के आदमी आठ करोड़ से ज्यादा हैं। २५-२५ जिलों में। इनमें से ही कुछ आदमी चले जांय तो दो करोड़ आदमी हो जायेंगे। और जिलों की बात उत्तर प्रदेश की छोड़िये। मध्य प्रदेश को छोड़िये। राजस्थान की गुजरात की महाराष्ट्र की छोड़िये। बिहार और बंगाल को छोड़ दीजिए। मैं तो दो करोड़ आदमियों की बात करता हूं। यह उत्तर प्रदेश के लखनऊ के पूर्वी जिलों के २५-२५ जिलों के कुछ ही आदमी चले जांय तो दो करोड़ आदमी हो जायेंगे।

यह छोटा कार्यक्रम नहीं है

यह छोटा कार्यक्रम नहीं होने जा रहा। इसको आप छोटा मत समझियेगा। फिर आप को वहां पछताना पड़ेगा। छोटा कार्यक्रम नहीं है। हर दृष्टि से जन संख्या की दृष्टि से। धर्म उपदेश की दृष्टि से, कर्म उपदेश की दृष्टि से। राष्ट्र की दृष्टि से। हरव्यवस्था से। हर आराम से। हर भलाई से यह एक अद्वितीय कार्यक्रम है। लोगों के सामने होने जा रहा है।

(शेष पृष्ठ १६८ पर देखें)

अमर सन्देश

सतपुरुषों के बचन और वाणी ही संसारी जीवों के लिये सदा से प्रेरणा के स्रोत रहे हैं। इस लिये अपने जीवन में नया मोड़ दीजिये। अमर सन्देश के अनमोल बचनों को पढ़ कर प्रेरणा प्राप्त कीजिये और संतों का संग ढूंढ कर सतसंग कीजिये जीवन को सत्विक, प्रेमी और मानवी बनाइये। अमर सन्देश में छपे स्वामी जी महराज के अमर सन्देश व्यक्तिगत सामाजिक, मानसिक और आत्मिक क्रांति ला रहे हैं। आप भी इसे पढ़कर समय के संग आगे बढ़िये और इष्ट मित्रों को पढ़ाइये। यह समय की पुकार है।

—० सेवा भक्ति और साधन ०—

❀ गुरु आज्ञा, चाहे सैन में हो या बैन में, पालन ही उनकी सेवा है।

❀ गुरुदेव की नीति, रीति और प्रीति का निरन्तर ध्यान रखना कहीं भी विरोध न आने देना ही भक्ति है।

❀ परमानन्द की प्राप्ति के लिये दोषों का त्याग कर अन्तः करण को पवित्र बनाकर गुरू के एक एक शब्द पर कुर्बान होना ही साधन है।

मधु संचय

❀ शिवनेत्र आज भी मिलता है।

❀ शिवनेत्र प्राप्ति का गुरू मिलना चाहिये।

❀ सच्चा गुरु मिलने पर ईश्वर प्राप्ति सरल है।

❀ ईश्वर जीते जी मिलता है इसी मनुष्य शरीर से।

❀ गुरु आज्ञा को पूरा करना ही गुरु पूजा है। अपनी शक्ति लगा देने के बाद शक्तिमान प्रभु की ओर देखना ही प्रार्थना है।

Scanned with CamScanner

जयगुरुदेव अमर सन्देश
वर्ष २१, अंक ६ अक्टूबर १९७८

रजिस्टर्ड नं०-4
Licence No. 1 Licensed to
Post without Prepayment

क्रमांक पुस्तक का नाम	मूल्य
१-साधक चिंतन निरुपण	३० पैसे
२-याद रक्खो गुरु के वचन	४० पैसे
३-प्रति दिन के विचार	३० पैसे
४-परमार्थी उपदेश	७५ पैसे
५-सन्तमत में सत्या निर्णय	६० पैसे
६-तुलसी वाणी	३० पैसे
७-यम लोकमार्ग	२० पैसे
८-ज्ञान रश्मि	७५ पैसे
९-हम गुरु को कितना मानते हैं	०५ पैसे
१०-इकट्ठा ९ पुस्तकों की गत्ते की जिल्द ३ रु०	

(नाम पता यहां है)

ग्राहक संख्या ....

श्री ....

पता

—: पद्य में :—

११-प्रार्थना चेतावनी संग्रह पूरी सजिल्द ३) रु० डाक खर्च कम से कम २) । पुस्तकों का सेट तथा प्रार्थना की किताब मंगाने के लिए डाक खर्च सहित मूल्य पहले भेजें । वी० पी० भेजने का नियम नहीं है ।

१२-स्वधर्म साप्ताहिक वार्षिक मूल्य १०) स्वामी जी की विचार धारा का साप्ताहिक समाचार पत्र स्वधर्म साप्ताहिक निकलता है जिसका वार्षिक मूल्य १०) तथा अर्द्ध वार्षिक मूल्य ५) इसका रुपया व्यवस्थापक स्वधर्म साप्ताहिक, २३, पाण्डेय बाजार आजमगढ़ के पते पर भेजें ।

रुपया भेजने तथा पुस्तकें मंगाने का पता—
व्यवस्थापक 'अमर सन्देश'
२३, पाण्डेय बाजार आजमगढ़

स्वामी और प्रकाशक—संत तुलसी दास जी महाराज, चिरौली सन्त आश्रम, कृष्ण नगर मथुरा द्वारा
मुद्रक—विश्वनाथ प्रसाद अग्रवाल के लिमिटेड अमर ज्योति प्रेस, आजमगढ़ में मुद्रित